गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका फरवरी-2021



# गुरुत्व ज्योतिष

## विद्या प्राप्ति विशेष



Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR
For Premium User

गुरुत्व ज्योतिष
मासिक ई-पत्रिका
फरवरी-2021

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

# अनुक्रम

## स्थायी और अन्य लेख



## इस विशेषांक अंक में पढ़े

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

# संपादकीय

*वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ:*

*निर्विघ्नं कुरु मे देव: सर्वकार्येषु सर्वदा*

माघ शुक्ल पंचमी को वसंत पंचमी के रुप में मनाया जाता हैं, जो हिंदू संस्कृति के प्रमुख त्योहारो में से एक त्योहार है, वसंत पंचमी के दिन विद्या की देवी सरस्वती की पूजा की जाती हैं।

पूरातन काल में भारत में ऋतुओं को छह भाग में बाँटा जाता था। उनमें से एक भाग हैं वसंत ऋतु, वसंत में तरह-तरह के फूलों पर बहार आजाती हैं, खेतों मे फसले चमकने लगती हैं, आम के पेडो पर बौर आने लग जाते हैं। इस लिये वसंत ऋतु का स्वागत करने के लिए शुक्ल पंचमी के दिन को एक बड़े उत्सव के रुप में मनाया जाता हैं, जिसमें विष्णु और कामदेव की विधि-वत पूजा होती हैं। शास्त्रों में बसंत पंचमी को ऋषि पंचमी, श्री पंचमी इत्यादी नामो से उल्लेखित किया गया हैं।

वंसत पंचमी अर्थात वंसत ऋतु के आगमन का प्रथम दिन। विद्वानो के मत से वंसत ऋतु का मौसम मनुष्य के जीवन में सकारात्मक भाव, ऊर्जा, आशा एवं विश्वास को जगाता हैं। हिन्दू संस्कृति में वंसत ऋतु का स्वागत विद्या की देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना के साथ किया जाता हैं। इनके पूजन से विद्या एवं ज्ञान की प्राप्ति होती हैं।

श्रीकृष्ण ने स्वयं गीता में कहा है कि बसंत ऋतु के रूप में भगवान कृष्ण प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होते हैं।

*या कुंदेंदु तुषार हार धवला या शुभ्र वृस्तावता । या वीणा वर दण्ड मंडित करा या श्वेत पद्मसना ।।*

*या ब्रह्माच्युत शंकर: प्रभृतिर्भि देवै सदा वन्दिता । सा माम पातु सरस्वती भगवती नि:शेष जाड्या पहा ॥१॥*

**भावार्थ:** जो विद्या की देवी भगवती सरस्वती कुन्द के फूल, चंद्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह श्वेत वर्ण की हैं और जो श्वेत वस्त्र धारण करती हैं, जिनके हाथ में वीणा-दण्ड शोभायमान है, जिन्होंने श्वेत कमलों पर अपना आसन ग्रहण किया है तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर आदि देवताओं द्वारा जो सदा पूजित हैं, वही संपूर्ण जड़ता और अज्ञान को दूर कर देने वाली माँ सरस्वती आप हमारी रक्षा करें।

वंसत पंचमी के दिन से भारत के कइ हिस्सो मे बच्चे को प्रथम अक्षर ज्ञान की शुरुवात की जाती है। एसी मान्यता है की वसंत पंचमी के दिन विद्यांभ करने से बच्चे की की वाणी में मां सरस्वती स्वयं वास करती और बच्चे पर जीवन भर कृपा वर्षाती हैं। एवं बच्चों में विद्या एवं ज्ञान का विकास होता हैं जिस्से बच्चें मे श्रेष्ठता, सदाचार, तेजस्विता जेसे सद्द गुणों का आगमन होना प्रारंभ होता हैं, और बच्चा उत्तम स्मरण शक्ति युक्त विद्वान होता हैं।

भारतीय शास्त्रकारो ने विद्या विहीन मनुष्य की तुलना पशु से की हैं। विद्या एवं ज्ञान ही मनुष्य की विशेषता हैं। पशुओं की तुलना में मनुष्य में ज्ञान शक्ति के कारण कुछ विशेषता हैं। परंतु अज्ञानी मनुष्य का जीवन निश्चय रुप से ही पशुओं से गया-गुजरा हैं। अज्ञानी मनुष्य को अपने जीवन में किसी दिशा में प्रगति करने का अवसर नहीं मिलता हैं।

व्यक्ति अपने जीवन निर्वाह की महत्वपूर्ण आवश्यकता भी कठिनाई से पूरी कर पाता हैं। उसे अनेक अभावों, असुविधा और आपत्तियों से भरी जिन्दगी जीनी पड़ सकती हैं। जिस व्यक्ति में ज्ञान की कमी होती हैं, उसको जीवन के हर क्षेत्र में सर्वत्र अभाव होते रहते हैं। व्यक्ति की उचित प्रगति के सभी रास्ते उसे बंध से प्रतित होते हैं।

कोई भी मनुष्य अपने जीवन में विद्या से विहीन एवं अज्ञानी न रहें। इसलिए हमारे विद्वान ऋषीमुनीयों ने

प्राचिन काल से ही हर व्यक्ति के लिये उपयोगी विद्या प्राप्त करने की आवश्यकता एवं अनिवार्य बताई है।

मनुष्य को प्राप्त होने वाली विद्या उसके ज्ञान का मुख्य आधार हैं। इसलिये जिस व्यक्ति को विद्या नहीं आती उसे ज्ञान प्राप्ति से वंचित रहना पड़ता हैं।

इसलिए माता-पिता अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा देकर उनके जीवन को संवारने का हर संभव प्रयास करते हैं। किंतु अक्सर देखने में आता है कि सारे प्रयासों के बावजूद बच्चों की शिक्षा में तरह-तरह की बाधाएं आती रहती हैं। इन बाधाओं को दूर करने का हर संभव प्रयास बच्चो एवं माता-पिता को अवश्य करना चाहिए।

कई बच्चों को घंटो-घंटो पढाई करने के उपरांत भी स्मरण नहीं रहता। परिक्षा में उत्तर देते समय उसने पढा हुआ भूल जाते हैं। एसी स्थिती में बच्चे के साथ माता पिता भी परेशान रहते हैं कि इतना पढने के उपरांत बच्चे को याद नहि रह पाता? इसका कारण काया हैं? और उपाय क्या हैं? यदि बच्चा पढाई नही करता तो अलग बात होजाती हैं, परंतु पढने के पश्चयार भी याद नहीं रहे तो इस मे बच्चा करे तो क्या करें? यह सबसे बडीं समस्या हो जाती हैं।

यदि विद्या प्राप्ति में अवरोध होता है, तो अंधकार और संकोच आ जाते हैं। वहीं ज्ञान, विद्या और धन का अभाव हो जाता है। विद्वता के लिए आवश्यक है कि ज्ञान की गति निरंतर बनी रहे। इसी लिए देवी सरस्वती की आराधना की जाती हैं की हमारी विद्या प्राप्ति अर्थात हमारी गति में कोई बाधा उपस्थित न हो, हमारी विद्या प्राप्ति की गति बनी रही, तो हमें जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार की संपत्तियों की प्राप्ति होती रहे।

गुरुत्व ज्योतिष के फरवरी-2021 विद्या प्राप्ति विशेष को आप सभी पाठको की जानकारी एवं अनुकूलता हेतु विद्या प्राप्ती से जुडी जानकारी या एवं उससे संबंधित उपायोका विस्तृत वर्णन किया गया हैं। जिसे अपना कर साधारण से साधारण व्यक्ति भी सरलता से लाभ उठा सकें। यदि जन्म कुंडली में उच्च शिक्षा का योग हो, किंतु विद्याध्ययन के समय अशुभ ग्रह की दशा के कारण रुकावटे आने का योग हो या रुकावटे आरही हो, तो संबंधित ग्रह की शांति हेतु ग्रह से संबंधित यंत्र को अपने घर में स्थापित करना लाभदायक होता हैं। ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने हेतु अन्य उपायो को भी अपनाया जासकता हैं।



**आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो मां सरस्वती की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे। मां सरस्वती से यही प्राथना हैं...**

**आपको एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से बसंत पंचमी की शुभकामनाएं...**

चिंतन जोशी

## ***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvakaryalay.in

# फरवरी 2021 मासिक पंचांग

| दि | वार | माह | पक्ष | तिथि | समाप्ति | नक्षत्र | समाप्ति | योग | समाप्ति | करण | समाप्ति | चंद्र राशि | समाप्ति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सोम | माघ | कृष्ण | चतुर्थी | 18:13 | उत्तराफाल्गुनी | 23:57 | अतिगंड | 09:53 | बव | 07:15 | कन्या | - |
| 2 | मंगल | माघ | कृष्ण | पंचमी | 16:05 | हस्त | 22:32 | धृति | 28:7 | तैतिल | 16:05 | कन्या | - |
| 3 | बुध | माघ | कृष्ण | षष्ठी | 13:57 | चित्रा | 21:07 | शूल | 25:13 | वणिज | 13:57 | कन्या | 09:50 |
| 4 | गुरु | माघ | कृष्ण | सप्तमी | 11:52 | स्वाति | 19:45 | गंड | 22:21 | बव | 11:52 | तुला | - |
| 5 | शुक्र | माघ | कृष्ण | अष्टमी | 09:51 | विशाखा | 18:28 | वृद्धि | 19:32 | कौलव | 09:51 | तुला | 12:47 |
| 6 | शनि | माघ | कृष्ण | नवमी-दशमी | 07:58-30:12 | अनुराधा | 17:17 | ध्रुव | 16:49 | गर | 07:58 | वृश्चिक | - |
| 7 | रवि | माघ | कृष्ण | एकादशी | 28:35 | जेष्ठा | 16:14 | व्याघात | 14:11 | बव | 17:22 | वृश्चिक | 16:15 |
| 8 | सोम | माघ | कृष्ण | द्वादशी | 27:10 | मूल | 15:20 | हर्षण | 11:39 | कौलव | 15:51 | धनु | - |
| 9 | मंगल | माघ | कृष्ण | त्रयोदशी | 25:58 | पूर्वाषाढ़ | 14:38 | वज्र | 09:17 | गर | 14:32 | धनु | 20:31 |
| 10 | बुध | माघ | कृष्ण | चतुर्दशी | 25:5 | उत्तराषाढ़ | 14:11 | व्यतिपात | 29:9 | विष्टि | 13:29 | मकर | - |
| 11 | गुरु | माघ | कृष्ण | अमावस्या | 24:35 | श्रवण | 14:04 | वरियान | 27:31 | चतुष्पाद | 12:47 | मकर | 26:11 |
| 12 | शुक्र | माघ | शुक्ल | प्रतिपदा | 24:33 | धनिष्ठा | 14:22 | परिघ | 26:15 | किंस्तुघ्न | 12:30 | कुंभ | - |
| 13 | शनि | माघ | शुक्ल | द्वितीया | 25:4 | शतभिषा | 15:10 | शिव | 25:24 | बालव | 12:44 | कुंभ | - |
| 14 | रवि | माघ | शुक्ल | तृतीया | 26:10 | पूर्वाभाद्रपद | 16:32 | सिद्धि | 25:1 | तैतिल | 13:32 | कुंभ | 10:09 |

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | सोम | माघ | शुक्ल | चतुर्थी | 27:51 | उत्तराभाद्रपद | 18:28 | साध्य | 25:5 | वणिज | 14:56 | मीन | |
| 16 | मंगल | माघ | शुक्ल | पंचमी | 30:3 | रेवति | 20:56 | शुभ | 25:34 | बव | 16:54 | मीन | 20:57 |
| 17 | बुध | माघ | शुक्ल | षष्ठी | - | अश्विनी | 23:48 | शुक्ल | 26:20 | कौलव | 19:18 | मेष | - |
| 18 | गुरु | माघ | शुक्ल | षष्ठी | 08:37 | भरणी | 26:53 | ब्रह्म | 27:17 | तैतिल | 08:37 | मेष | - |
| 19 | शुक्र | माघ | शुक्ल | सप्तमी | 11:18 | कृतिका | 29:57 | इन्द्र | 28:13 | वणिज | 11:18 | मेष | 09:41 |
| 20 | शनि | माघ | शुक्ल | अष्टमी | 13:52 | रोहिणि | - | वैधृति | 28:57 | बव | 13:52 | वृष | - |
| 21 | रवि | माघ | शुक्ल | नवमी | 16:01 | रोहिणि | 08:43 | विषकुंभ | 29:18 | कौलव | 16:01 | वृष | 21:56 |
| 22 | सोम | माघ | शुक्ल | दशमी | 17:33 | मृगशिरा | 10:57 | प्रीति | 29:9 | गर | 17:33 | मिथुन | - |
| 23 | मंगल | माघ | शुक्ल | एकादशी | 18:19 | आद्रा | 12:30 | आयुष्मान | 28:23 | विष्टि | 18:19 | मिथुन | - |
| 24 | बुध | माघ | शुक्ल | द्वादशी | 18:16 | पुनर्वसु | 13:17 | सौभाग्य | 27:0 | बालव | 18:16 | मिथुन | 07:10 |
| 25 | गुरु | माघ | शुक्ल | त्रयोदशी | 17:25 | पुष्य | 13:17 | शोभन | 25:2 | तैतिल | 17:25 | कर्क | - |
| 26 | शुक्र | माघ | शुक्ल | चतुर्दशी | 15:53 | आश्लेषा | 12:34 | अतिगंड | 22:32 | वणिज | 15:53 | कर्क | 12:35 |
| 27 | शनि | माघ | शुक्ल | पूर्णिमा | 13:47 | मघा | 11:18 | सुकर्मा | 19:37 | बव | 13:47 | सिंह | - |
| 28 | रवि | फाल्गुन | कृष्ण | प्रतिपदा | 11:16 | पूर्वाफाल्गुनी | 09:35 | धृति | 16:24 | कौलव | 11:16 | सिंह | 15:07 |

**विशेष सूचना:** 1). सभी समय भारतीय समय अनुसार 24 घण्टे के अनुसार दर्शाये गए हैं।, 2). भारतीये पंचांग में दिन का आरंभ सूर्योदय से होकर है तथा अगले दिन सूर्योदय के पूर्व दिन को समाप्त माना जाता है। 3). आधी रात (रात 12 बजे / 24 Hr) के बाद के समय को आगामि दिन के समय को (सूर्योदय से पूर्व) दर्शाने के लिए आगामि दिन से जोड़ कर दर्शाया हैं। 4). पंचांग गणना को भारत की राष्ट्रीय राजधानी **नई दिल्ली** के अनुसार दर्शाया गए हैं।

# फरवरी 2021 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

| दि | वार | माह | पक्ष | तिथि | समाप्ति | प्रमुख व्रत-त्योहार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सोम | माघ | कृष्ण | चतुर्थी | 18:13 | - |
| 2 | मंगल | माघ | कृष्ण | पंचमी | 16:05 | - |
| 3 | बुध | माघ | कृष्ण | षष्ठी | 13:57 | - |
| 4 | गुरु | माघ | कृष्ण | सप्तमी | 11:52 | - |
| 5 | शुक्र | माघ | कृष्ण | अष्टमी | 09:51 | - |
| 6 | शनि | माघ | कृष्ण | नवमी-दशमी | 07:58-30:12 | - |
| 7 | रवि | माघ | कृष्ण | एकादशी | 28:35 | षटतिला एकादशी व्रत(स्मार्त), |
| 8 | सोम | माघ | कृष्ण | द्वादशी | 27:10 | षटतिला एकादशी व्रत (वैष्णव), तिल द्वादशी, |
| 9 | मंगल | माघ | कृष्ण | त्रयोदशी | 25:58 | भोम प्रदोष व्रत, |
| 10 | बुध | माघ | कृष्ण | चतुर्दशी | 25:5 | मासिक शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी, |
| 11 | गुरु | माघ | कृष्ण | अमावस्या | 24:35 | स्नान-दान-श्राद्ध हेतु उत्तम माघी अमावस्या, मौनी अमावस का स्नान, ब्रह्मसावित्री व्रत, द्वापरयुगादि तिथि, त्रिवेणी अमावस्या (ओड़ीसा), |
| 12 | शुक्र | माघ | शुक्ल | प्रतिपदा | 24:33 | गुप्त शिशिर नवरात्र प्रारंभ, बालेन्दु-पूजन, सूर्य की कुम्भ संक्रान्ति रात्रि 09:27 बजे, (कुम्भ संक्रान्ति का पुण्य काल दोपहर 12:36 से संध्या 18:09 बजे तक,) (महा पुण्य काल दोपहर 16:18 से संध्या18:09 बजे तक) संक्रान्ति के दिन गोदावरी में स्नान अत्यन्त पुण्यप्रद, |
| 13 | शनि | माघ | शुक्ल | द्वितीया | 25:4 | नवीन चन्द्र-दर्शन, |
| 14 | रवि | माघ | शुक्ल | तृतीया | 26:10 | गौरी तृतीया, गौरी तीज व्रत, |
| 15 | सोम | माघ | शुक्ल | चतुर्थी | 27:51 | वरदविनायक चतुर्थी व्रत (चं.अस्त रा.9:31), तिल चतुर्थी, कुन्द चतुर्थी, सरोजनी नायडू जयन्ती, उमा चतुर्थी, त्रिपुरा चतुर्थी, ढुण्ढिविनायक चतुर्थी, |

| 16 | मंगल | माघ | शुक्ल | पंचमी | 30:3 | वसन्त पंचमी, श्री पंचमी, सरस्वती-लेखिनी पूजा, वागीश्वरी जयन्ती, तक्षक पूजा, |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | बुध | माघ | शुक्ल | षष्ठी | - | स्कन्दषष्ठी व्रत, शीतलाषष्ठी, दरिद्रताहरण षष्ठी, मन्दार षष्ठी व्रत |
| 18 | गुरु | माघ | शुक्ल | षष्ठी | 08:37 | वृद्धि तिथि षष्ठी |
| 19 | शुक्र | माघ | शुक्ल | सप्तमी | 11:18 | अचला सप्तमी व्रत, सूर्यरथ सप्तमी, आरोग्य सप्तमी व्रत, सन्तान सप्तमी व्रत, अद्वैत सप्तमी व्रत, चन्द्रभागा सप्तमी (ओड़ीसा), नर्मदा जयन्ती, भीष्माष्टमी-भीष्म पितामह का तर्पण एवं श्राद्ध, |
| 20 | शनि | माघ | शुक्ल | अष्टमी | 13:52 | श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, |
| 21 | रवि | माघ | शुक्ल | नवमी | 16:01 | श्रीमहानन्दा नवमी व्रत, द्रोण नवमी, गुप्त शिशिर नवरात्र पूर्ण, |
| 22 | सोम | माघ | शुक्ल | दशमी | 17:33 | माघी विजयादशमी, शल्यदशमी, |
| 23 | मंगल | माघ | शुक्ल | एकादशी | 18:19 | जया एकादशी व्रत (सर्वे), भैमी एकादशी (प.बंगाल), |
| 24 | बुध | माघ | शुक्ल | द्वादशी | 18:16 | भीष्म द्वादशी, जयन्ती महाद्वादशी व्रत, श्यामबाबा द्वादशी, तिल द्वादशी, वाराह द्वादशी, संतान द्वादशी व्रत, शालिग्राम द्वादशी, सोपपदा द्वादशी, प्रदोष व्रत, |
| 25 | गुरु | माघ | शुक्ल | त्रयोदशी | 17:25 | |
| 26 | शुक्र | माघ | शुक्ल | चतुर्दशी | 15:53 | यक्षिणी चतुर्दशी, व्रत हेतु उत्तम माघी पूर्णिमा, |
| 27 | शनि | माघ | शुक्ल | पूर्णिमा | 13:47 | स्नान-दान-हेतु उत्तम माघी पूर्णिमा, ललिता महाविद्या जयन्ती, माघ-स्नान पूर्ण, अग्नि-उत्सव (ओड़ीसा), काव पूर्णिमा, दाण्डारोपिणी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण पूजा-कथा, प्रयाग महाकुम्भ का पर्व-स्नान |
| 28 | रवि | फाल्गुन | कृष्ण | प्रतिपदा | 11:16 | फाल्गुन मास प्रारंभ, फाल्गुन में वाग्मती-स्नान महापुण्यप्रद, |

**विशेष सूचना:** 1). सभी समय भारतीय समय अनुसार 24 घण्टे के अनुसार दर्शाये गए हैं।, 2). भारतीये पंचांग में दिन का आरंभ सूर्योदय से होकर है तथा अगले दिन सूर्योदय के पूर्व दिन को समाप्त माना जाता है। 3). आधी रात (रात 12 बजे / 24 Hr) के बाद के समय को आगामि दिन के समय को (सूर्योदय से पूर्व) दर्शाने के लिए आगामि दिन से जोड़ कर दर्शाया हैं। 4). पंचांग गणना को भारत की राष्ट्रीय राजधानी **नई दिल्ली** के अनुसार दर्शाया गए हैं।

## फरवरी 2021 - विशेष योग

| सर्वार्थ सिद्धि योग (कार्य सिद्धि योग) | | | |
|---|---|---|---|
| 05 | 18:28 से 06 फरवरी 07:06 तक | 20 | 06:55 से 21 फरवरी 06:54 तक |
| 07 | 16:15 से 08 फरवरी 07:05 तक | 22 | 06:53 से 10:58 तक |
| 14 | 16:33 से 15 फरवरी 06:59 तक | 25 | 06:50 से 13:17 तक |
| 16 | 20:57 से 17 फरवरी 06:58 तक | 28 | 09:36 से 1 मार्च 06:46 तक |
| **त्रिपुष्कर योग (तीन गुना फल दायक)** | | | |
| 13 | 15:11 से 14 फरवरी 00:56 तक | 28 | 11:18 से 1 मार्च 06:46 तक |
| 23 | 18:05 से 24 फरवरी 06:51 तक | | |
| **गुरु पुष्यामृत योग** | | | |
| 25 | 06:50 से 13:17 तक | | |
| **विघ्नकारक भद्रा** | | | |
| 03 | 14:12 से 04 फरवरी 01:09 तक | 19 | 10:58 से 20 फरवरी 00:16 तक |
| 06 | 19:18 से 07 फरवरी 06:26 तक | 23 | 05:46 से 18:05 तक |
| 10 | 02:05 से 13:34 तक | 26 | 15:49 से 27 फरवरी 02:51 तक |
| 15 | 14:43 से 16 फरवरी 03:36 तक | | |

**योग फल :**

- ❖ सर्वार्थ सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- ❖ त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- ❖ गुरु पुष्यामृत योग में किये गये किये गये शुभ कार्य मे शुभ फलो की प्राप्ति होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- ❖ शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

**विशेष सूचना:** 1). सभी समय भारतीय समय अनुसार 24 घण्टे के अनुसार दर्शाये गए हैं।, 2). भारतीये पंचांग में दिन का आरंभ सूर्योदय से होकर है तथा अगले दिन सूर्योदय के पूर्व दिन को समाप्त माना जाता है। 3). आधी रात (रात 12 बजे / 24 Hr) के बाद के समय को आगामि दिन के समय को (सूर्योदय से पूर्व) दर्शाने के लिए आगामि दिन से जोड़ कर दर्शाया हैं। 4). पंचांग गणना को भारत की राष्ट्रीय राजधानी **नई दिल्ली** के अनुसार दर्शाया गए हैं।

## दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

| | गुलिक काल (शुभ) | यम काल (अशुभ) | राहु काल (अशुभ) |
|---|---|---|---|
| वार | समय अवधि | समय अवधि | समय अवधि |
| रविवार | 03:00 से 04:30 | 12:00 से 01:30 | 04:30 से 06:00 |
| सोमवार | 01:30 से 03:00 | 10:30 से 12:00 | 07:30 से 09:00 |
| मंगलवार | 12:00 से 01:30 | 09:00 से 10:30 | 03:00 से 04:30 |
| बुधवार | 10:30 से 12:00 | 07:30 से 09:00 | 12:00 से 01:30 |
| गुरुवार | 09:00 से 10:30 | 06:00 से 07:30 | 01:30 से 03:00 |
| शुक्रवार | 07:30 से 09:00 | 03:00 से 04:30 | 10:30 से 12:00 |
| शनिवार | 06:00 से 07:30 | 01:30 से 03:00 | 09:00 से 10:30 |

# फरवरी 2021 रवि योग

| | | | |
|---|---|---|---|
| 02 | 10:33 से 03 फरवरी 07:08 तक | 21 | 08:44 से 22 फरवरी 06:53 तक |
| 03 | 07:08 से 21:08 तक | 22 | 06:53 से 23 फरवरी 06:52 तक |
| 14 | 16:33 से 15 फरवरी 06:59 तक | 23 | 06:52 से 12:31 तक |
| 15 | 06:59 से 18:29 तक | 25 | 13:17 से 26 फरवरी 06:49 तक |
| 16 | 20:57 से 17 फरवरी 06:58 तक | 26 | 06:49 से 12:35 तक |
| 17 | 06:58 से 23:49 तक | | |

सूर्यभाद्वेदगोतर्क दिग्विश्व नखसम्मिते। चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसङ्घविनाशकाः

अर्थातः सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनती करने पर यदि यह 4, 6, 9, 10, 13, 20 (नक्षत्र क्रम से आगे हो) यह क्रम में कोई भी एक क्रम का नक्षत्र जिस दिन हो उस दिन **रवि योग** होता है। नक्षत्र का यह समय **रवि योग** का समय होता है।

सूर्य ग्रह सभी ग्रहों का राजा है। सौरमंडल में सबसे उर्जावान ग्रह सूर्य है जिस्से हमें प्रकाश एवं प्रत्यक्ष या परोक्ष रुपसे उर्जा जीवन उर्जा प्राप्त होती है। सूर्य को हिंदू धर्म में सूर्य को बहुत पवित्र देव माना जाता है एवं सूर्य की पूजा-उपासना की जाती है। नौ ग्रहों में सूर्य को श्रेष्ठ ग्रह माना जाता है।

- इस लिए रवि योग भी योगों में उत्तम एवं शुभफलदाय माना जाता है। यह रवि योग सभी प्रकार के दोषों एवं अशुभ प्रभावों को दूर करता है।
- यदि किसी दिन शुभ कार्य करना अनिवार्य हो एवं एवं उस दिन कोई शुभ मुहूर्त न हो तो शुभ कार्य **रवि योग** में कर सकते है।
- रवि योग में कार्यों में वांछित अफलता प्राप्त होती हैं इस लिए यह अत्यंत लाभदायक योग है।
- रवि योग के दिन भगवान सूर्य की पूजा करना उत्तम होता है।
- रवि योग के दिन सूर्य देवता को अर्घ्य देना भी विशेष लाभ होता है।
- रवि योग के दिन सूर्य मंत्र का जप करना विशेष लाभदायक होता है।
- रवि योग को सूर्य देव का वरदान प्राप्त है इस लिए यह अत्याधिक प्रभावशाली है।
- रवि योग में किए गए सभी शुभ कार्यों में किसी भी प्रकार के विघ्न एवं बाधाएं उत्पन्न नहीं होती है तथा कार्य में शीघ्र सफलता मिलती है।
- रवि योग में दूरस्थान की यात्राएं शुभफलदायक होती है।
- रवि योग में कर्ज मुक्ति के प्रसाय करने से कर्ज से शीध्र मुक्ति मिल सकती है।
- रवि योग में स्वास्थ्य वृद्धि के सभी प्रकार के प्रयास अथवा शल्य चिकित्सा उत्तम होती है।
- रवि योग में लंबे समय से रुके हुए कार्य को पूर्ण करने का प्रयास भी विशेष लाभदाय सिद्ध होता है।

**विशेष सूचनाः** 1). सभी समय भारतीय समय अनुसार 24 घण्टे के अनुसार दर्शाये गए हैं।, 2). भारतीये पंचांग में दिन का आरंभ सूर्योदय से होकर है तथा अगले दिन सूर्योदय के पूर्व दिन को समाप्त माना जाता है। 3). आधी रात (रात 12 बजे / 24 Hr) के बाद के समय को आगामि दिन के समय को (सूर्योदय से पूर्व) दर्शाने के लिए आगामि दिन से जोड़ कर दर्शाया हैं। 4). पंचांग गणना को भारत की राष्ट्रीय राजधानी **नई दिल्ली** के अनुसार दर्शाया गए हैं।

## दिन के चौघडिये

| समय | रविवार | सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 06:00 से 07:30 | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल |
| 07:30 से 09:00 | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ |
| 09:00 से 10:30 | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग |
| 10:30 से 12:00 | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग |
| 12:00 से 01:30 | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल |
| 01:30 से 03:00 | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |
| 03:00 से 04:30 | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत |
| 04:30 से 06:00 | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल |

## रात के चौघडिये

| समय | रविवार | सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 06:00 से 07:30 | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |
| 07:30 से 09:00 | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग |
| 09:00 से 10:30 | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ |
| 10:30 से 12:00 | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत |
| 12:00 से 01:30 | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल |
| 01:30 से 03:00 | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग |
| 03:00 से 04:30 | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल |
| 04:30 से 06:00 | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

**नोट:** प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

## चौघडिये के स्वामी ग्रह

| शुभ चौघडिया | | मध्यम चौघडिया | | अशुभ चौघड़िया | |
|---|---|---|---|---|---|
| चौघडिया | स्वामी ग्रह | चौघडिया | स्वामी ग्रह | चौघडिया | स्वामी ग्रह |
| शुभ | गुरु | चर | शुक्र | उद्वेग | सूर्य |
| अमृत | चंद्रमा | | | काल | शनि |
| लाभ | बुध | | | रोग | मंगल |

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

## दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक

| वार | 1.घं | 2.घं | 3.घं | 4.घं | 5.घं | 6.घं | 7.घं | 8.घं | 9.घं | 10.घं | 11.घं | 12.घं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रविवार | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि |
| सोमवार | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य |
| मंगलवार | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र |
| बुधवार | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल |
| गुरुवार | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध |
| शुक्रवार | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु |
| शनिवार | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र |

## रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक

| वार | 1.घं | 2.घं | 3.घं | 4.घं | 5.घं | 6.घं | 7.घं | 8.घं | 9.घं | 10.घं | 11.घं | 12.घं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रविवार | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध |
| सोमवार | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु |
| मंगलवार | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र |
| बुधवार | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि |
| गुरुवार | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य |
| शुक्रवार | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र |
| शनिवार | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल |

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

**विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।**

- ❖ सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

# कुम्भ संक्रान्ति का राशिफल

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

12 फरवरी 2021 से 14 मार्च 2021 तक जन्मकालीन चन्द्रराशि से कुम्भ संक्रान्ति का राशिफल

**मकर संक्रान्ति का सामान्य फल**

❖ शास्त्रोक्त मत से कुम्भ संक्रान्ति के दौरान धन या किमती वस्तुओं के गुम, चोरी-लूटपाट की आशंकाएं होती हैं इसलिए हानि से बचाव के लिए अतिरिक्त सतर्कता रखनी चाहिए।

- उत्पादन एवं वस्तुओं की लागत सामान्य होगी।
- लोगों में भय और चिन्ता की वृद्धि संभव है।
- लोगों को स्वास्थ्य लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं, देशों के बीच सम्बन्ध में सुधार होगा होंगे। और अनाज भण्डारण में वृद्धि हो सकती है।

### मेष

सूर्य का एकादश स्थान पर गोचर हो तो कार्यक्षेत्र तथा विभिन्न स्त्रोत से आकस्मिक धन लाभ संभव है, आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। पूंजि निवेश की योजना बनेगी। कार्यक्षेत्र सहकर्मी एवं उच्चाधिकारीयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा एवं थोड़े से प्रयासों से कार्यक्षेत्र में विशेष लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। प्रयासों से परिवार में आपसी रिश्तों में मधुरता आयेगी। स्वाथ्य उत्तम रहेगा तथा कोई रोग हैं तो उचित चिकित्सा से स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं दूर हो सकती हैं।

### वृषभ

सूर्य का दशम स्थान पर गोचर हो तो आपके सामाजिक मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में विशेष रुप से सफलता प्राप्त होती हैं। यदि जीवन में कोई पूरानी समस्याएं हैं तो इस दौरान उचित प्रयासो से अपनी समस्याओं को दूर करने में आप सक्षम होंगे। सरकार से विशेष लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। सहकर्मी एवं उच्चाधिकारीयों के सहयोग से पदौन्नति संभव हैं। पारिवारीक सुख में वृद्धि होगी।

### मिथुन

सूर्य का नवम स्थान पर गोचर हो तो इस दौरान कार्यक्षेत्र में मिश्रित फल प्राप्त हो सकते है। इस दौरान महत्व पूर्ण कार्यों में विशेष लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आर्थिक मामलों में विशेष लाभ की प्राप्ति होगी। नौकरी में स्थानांतरण तथा पदौन्नति संभव है। पिता के स्वास्थ्य की अतिरिक्त देखभाल करने की आवश्यक्ता एवं पिता के स्वास्थ्य से सम्बन्धित चिंता हो सकती है। धार्मिक यात्रा पर जाने की योजना बन सकती है। इस दौरान निर्णय समझदारी से ले। खाने-पीने का ध्यान रखें ।

## कर्क

सूर्य का अष्टम स्थान पर गोचर हो तो कार्यक्षेत्र में सावधानी बरतने अन्यथा व्यर्थ के वाद-विवाद से चुनौतीयों का सामना करना पड़ सकता है। मानसिक तनाव में वृद्धि हो सकती है। खाने-पीने का विशेष ध्यान रखे तथा स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें अन्यथा उदर से संबंधित समस्याएं हो सकती है। आर्थिक में समस्याएं संभव है। परिवार के लोगों से अनबन हो सकती हैं अतः शांति पूर्वक रिश्तों को मजबूत बनाये रखने का प्रयास करें।

## सिंह

सूर्य का सातवें स्थान पर गोचर हो तो पति-पत्नी के रिश्तों में कुछ समस्याएं हो सकती है। व्यावसायिक साझेदारी के कार्यों में मतभेद हो सकता है। धैर्य व संयम बर्ते अन्यथा अत्याधिक कलह से रिश्ते खराब हो सकते हैं। यात्रा में कष्ट हो सकता हैं। नौकरी, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। इस दौरान उदर में पीड़ा होती है। साझेदारी के कार्य में मतभेद हो सकते हैं अतः सावधान रहें।

## कन्या

सूर्य का षष्ठम स्थान पर गोचर हो तो विभिन्न कार्यों में सफलता प्राप्त होती हैं। सरकार से लाभ प्राप्ति संभव हैं। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। से इस दौरान कोर्ट-कचहरी के कार्य अथवा वाद-विवाद में विजय प्राप्त हो सकती हैं। इस दौरान उचित उपायों से स्वास्थ्य लाभ होगा तथा पुराने रोगों से छुटकारा मिल सकता है। वाहन इत्यादि से सावधान रहे अन्यथा दुर्घटना हो सकती है। पूंजि निवेश कार्यों के लिए यह समय उत्तम हो सकता हैं।

## तुला

सूर्य का पंचम स्थान पर गोचर हो तो शिक्षा प्राप्ति में बाधा संभव है। प्रेम संबंधित मामले में समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। मानसिक चिंता, भ्रम इत्यादि की प्रबलता हो सकती हैं। कार्यक्षेत्र में आवश्यक्ता से अधिक परिश्रम करने के उपरांत भी वांछित सफलता मिलने मे कष्ट संभव हैं। इस दौरन कार्यक्षेत्र में परिवर्तन संभव है। संतान पक्ष को कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। उदर विकार हो सकता हैं, अतः खान-पान का विशेष ध्यान रखें।

## वृश्चिक

सूर्य का चतुर्थ स्थान पर गोचर हो तो पारिवारीक सुख में वृद्धि होगी। घर-परिवार के सुख साधनों में वृद्धि होगी। दूरस्थ स्थानों की यात्राएं हो सकती है। भूमि-भवन के मामलों में लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। नया वाहन इत्यादि की प्राप्ति हो सकती है। कार्य क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी, नौकरी से जुड़े है तो पदौन्नति के अवसर प्राप्त हो सकते है। इस दौरान माता को कुछ कष्ट हो सकता हैं। इस दौरान अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें हृदय संबंधित समस्याएं उत्पन्न हो सकती है ।

## धनु

सूर्य का तृतीय स्थान पर गोचर हो तो कार्यक्षेत्र में साहस एवं पराक्रम से सफलता प्राप्त हो सकती हैं। सरकारी विभाग से जुड़े कार्यों से लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। नौकरी से जुड़े लोगों को पदोन्नति के अवसर प्राप्त हो सकते है। आर्थिक स्थिती मजबूत होगी। मित्रों एवं सहोदर से लाभ प्राप्ति संभव हो सकती हैं। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। विरोधि एवं शत्रुपक्ष परास्त होंगे। सामाजिक मान-सम्मान में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होती हैं।

## मकर

सूर्य का द्वितीय स्थान पर गोचर हो तो प्रियजनों एवं उच्चाधिकारियों से बातचित में अपनी वाणी पर नियंत्रण रखे अन्यथा रिश्ते बिगड़ सकते है। परिवार में अशांति का माहौल रह सकता है। इस दौरान विपरित परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में गलत निणयों अथवा आवश्यकता से अधिक खर्च के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ सकता हैं। सेहत का विशेष ध्यान रखे इस दौरान आंख, दांत एवं मुख से जुडी समस्याएं कष्ट दे सकती हैं।

## कुंभ

सूर्य का प्रथम स्थान पर गोचर हो तो इस दौरान दैनिक जीवन में कुछ नया कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती है। कार्यक्षेत्र में थोड़े से परिश्रम समसय से रुके हुए कार्य पूरे हो सकते है। आपके आत्म विश्वास में वृद्धि होगी। अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखें किसी प्रकार से पित्त-विकार में वृद्धि हो सकती हैं या अन्य कोई रोग से पीड़ा संभव हैं। इस दौरान यात्रा करना प्रतिकूल साबित हो सकता है। आवश्यक्ता से अधिक क्रोध के कारण पारिवारिक रिश्तों में नोक-झोक हो सकती है।

## मीन

सूर्य का द्वादश स्थान पर गोचर हो तो कार्यक्षेत्र में मिश्रित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं जिस कारण कई बार उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। इस दौरान अपने खर्चो पर नियंत्रण रखे तथा बड़े कर्ज लेने से बचे अन्यथा कर्ज के भुगतान में विलम्ब संभव हैं। अनावश्यक यात्रा तथा भ्रमण से बचने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा इससे नुक़सान संभव है। सरकारी कार्यों में थोड़ा विलंब सम्भाव है। इस दौरान अपनी आंखों एवं पेट का ध्यान रखें अन्यथा समस्याएं संभव है। प्रियजनों के साथ रिश्तों में गलतफहमी के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

# षटतिला एकादशी व्रत कथा 7-फरवरी-2021

संकलन गुरुत्व कार्यालय

**माघ कृष्ण एकादशी (षटतिला एकादशी)**

**षटतिला एकादशी व्रत:**

एक बार युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से प्रश्न किया हे! भगवन् ! माघ मास के कृष्णपक्ष की जो एकादशी होती है, उसका क्या नाम है? उसकी विधि क्या है? तथा उसमें किस देवता का पूजन किया जाता है?, उसका फल क्या है ? । कृपया यह सब बताइये।

भगवान श्रीकृष्ण बोले: नृपश्रेष्ठ ! माघ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी षटतिला के नाम है, जो सभी पापों का नाश करने वाली है। मुनि पुलस्त्य ने इसकी जो पापनाशिनी कथा दाल्भ्य से कही थी, उसे ध्यान पूर्वक सुनो।

दाल्भ्य ने मुनि पुलस्त्य से पूछा हे ब्रह्मन्! मृत्युलोक में उत्पन्न हुए प्राणी प्राय: पापकर्म करते रहते हैं। उन्हें नरक में न जाना पड़े इसके लिए कौन सा उपाय है? यह बताने की कृपा करें।

पुलस्त्यजी बोले: हे महाभाग! माघ मास आने पर मनुष्य को चाहिए कि वह स्नानादिसे निवृत्त होकर पवित्रता से इन्द्रियों को संयमित रखते हुए काम, क्रोध, अहंकार, लोभ और दूसारों की निंदा आदि गुणों को त्याग दे। भगवान श्रीविष्णु का स्मरण करके जल से पैर धोकर भूमि पर पड़े हुए गोबर का संग्रह करे। उसमें तिल और कपास मिलाकर एक सौ आठ पिंडिकाएँ बनाये। फिर माघ मास में जिस दिन आर्द्रा अथवा मूल नक्षत्र आये, उस दिन कृष्णपक्ष की एकादशी का व्रत करने के लिए नियम ग्रहण करें। उस दिन स्नानादिसे निवृत्त तथा पवित्र होकर शुद्ध भाव से भगवान श्रीविष्णु का पूजन करें।

पूजन में कोई भूल-चूक हो जाने पर भगवान श्रीकृष्ण का श्रद्धा-भाव से नामोच्चारण करें। रात को जागरण तथा हवन करें। चन्दन, अरगजा, कपूर, नैवेद्य आदि सामग्री से शंख, चक्र और गदा धारण करनेवाले देवदेवेश्वर श्रीहरि की पूजा करें। तत्पश्चात् भगवान का स्मरण करके बारंबार श्रीकृष्ण के नाम का उच्चारण करते हुए कुम्हड़े(कद्दू), नारियल अथवा बिजौरे के फल से भगवान को विधिपूर्वक पूजन कर अर्ध्य दें। यदि अन्य सब सामग्रियां उपलब्ध ना हो तो सौ सुपारियों के द्वारा भी पूजन और अर्ध्यदान किया जा सकता है।

*कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वमगतीनां गतिर्भव।*
*संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम॥*
*नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।*
*सुब्रह्मण्य नमस्तेस्तु महापुरुष पूर्वज॥*
*गृहाणार्ध्यं मया दत्तं लक्ष्म्या सह जगत्पते।*

अर्थात: सच्चिदानन्द स्वरुप श्रीकृष्ण! आप बड़े दयालु हैं। हम आश्रय हीन जीवों के आप आश्रय दाता होइये। हम संसार समुद्र में डूब रहे हैं, आप हम पर प्रसन्न होइये। कमलनयन! विश्वभावन! सुब्रह्मण्य! महापुरुष! सबके पूर्वज! आपको नमस्कार है! जगत्पते! मेरा दिया हुआ अर्ध्य आप लक्ष्मीजी के साथ स्वीकार करें।

तत्पश्चात् ब्राह्मण का पूजन करें।

उसे जल का घड़ा, छाता, जूता और वस्त्र दान करें। दान करते समय इष्ट से प्राथना करें। इस दान के द्वारा भगवान श्रीकृष्ण मुझ पर प्रसन्न होइये। अपनी शक्ति के अनुसार श्रेष्ठ ब्राह्मण को काली गौ का दान करें। द्विजश्रेष्ठ! विद्वान पुरुष को चाहिए कि वह तिल से भरा हुआ पात्र भी दान करे। उन तिलों के बोने पर उनसे जितनी शाखाएँ पैदा हो सकती हैं, उतने हजार वर्षों तक वह स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है । तिल से स्नान करे, तिल का उबटन लगाये, तिल मिलाया हुआ जल पीये, तिल को भोजन के काम में ले तिल का दान करे और तथा तिल से हवन करें।

इस प्रकार हे नृपश्रेष्ठ ! छ: कामों में तिल का उपयोग करने के कारण यह एकादशी षटतिला कहलाती है, जो सब पापों का नाश करनेवाली है ।

# जया एकादशी व्रत कथा 23-फरवरी-2021

संकलन गुरुत्व कार्यालय

**माघ शुक्ल एकादशी (जया एकादशी)**

**जया एकादशी व्रत:**

एक बार युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से प्रश्न किया हे! भगवन् ! माघ मास के शुक्लपक्ष की जो एकादशी होती है, उसका क्या नाम है? उसकी विधि क्या है? तथा उसमें किस देवता का पूजन किया जाता है?, उसका फल क्या है ?, कृपया यह सब बताइये।

भगवान श्रीकृष्ण बोले: राजेन्द्र ! माघ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम जया है, जो सब पापों का नाश करनेवाली पवित्र तथा उत्तम एकादशी मनुष्यों को सभी प्रकार के उत्तम भाग और मोक्ष प्रदान करने वाली है। जया एकादशी ब्रह्महत्या जैसे पाप तथा पिशाचत्व का भी विनाश करने वाली है। इसका व्रत करने से मृत्यु के पश्चयात मनुष्यों को कभी भी प्रेतयोनि में नहीं जाना पड़ता।

इसलिए राजन्! विधि-विधान से जया नाम की एकादशी का व्रत करना चाहिए। अब इसकी जो पापनाशिनी कथा ध्यान पूर्वक सुनो।

एक समय की बात है। स्वर्गलोक में देवराज इन्द्र का राज था। देवगण पारिजात वृक्षों से युक्त नंदनवन में अप्सराओं के साथ विहार कर रहे थे। पचास करोड़ गन्धर्वों के नायक देवराज इन्द्र ने वन में विहार करते हुए बड़े हर्ष के साथ नृत्य का आयोजन किया। श्रेष्ठ गन्धर्व उसमें गान कर रहे थे, जिनमें पुष्पदन्त, चित्रसेन तथा उसका पुत्र तीन प्रधान थे। चित्रसेन की स्त्री का नाम मालिनी था। मालिनी से एक कन्या उत्पन्न हुई थी, जो पुष्पवन्ती के नाम से विख्यात थी। पुष्पदन्त गन्धर्व का एक पुत्र था, जिसको लोग माल्यवान कहते थे। माल्यवान पुष्पवन्ती के रुप पर अत्यन्त मोहित था। ये दोनों भी इन्द्र की प्रसन्नता के लिए नृत्य करने के लिए आये थे। इन दोनों का नृत्य-गान हो रहा था। इनके साथ अप्सराएँ भी थीं। परस्पर अनुराग के कारण ये दोनों मोह के वशीभूत हो गये। चित्त में अस्थिरता के कारण वे श्रेष्ठ गान न गा सके। कभी उनकी ताल में भंग हो जाता था तो कभी गीत बंद हो जाता था। इन्द्र ने इस लापरवाही को अपना अपमान समझकर वे दोनों पर कुपित हो गये।

अत: इन दोनों को शाप देते हुए बोले: ओ मूर्खो! तुम दोनों को धिक्कार है! तुम लोग पतित और मेरी आज्ञाभंग करनेवाले हो, अत: दोनों पति-पत्नी के रुप में रहते हुए पिशाच हो जाओ ।'

इन्द्र के एसे शाप देने पर इन दोनों के मन में बड़ा दु:ख हुआ तथा शाप के प्रभाव से दोनों पिशाचयोनि को प्राप्त हुए। दोनों हिमालय पर्वत पर चले गये और भयंकर दु:ख भोगने लगे। शारीरिक पातक से उत्पन्न ताप से पीड़ित होकर दोनों ही पर्वत की कन्दराओं में विचरते रहते थे। एक दिन पिशाच ने अपनी पत्नी पिशाची से कहा: हम दोनोंने कौन सा पाप किया है, जिससे यह पिशाचयोनि प्राप्त हुई है? नरक का कष्ट अत्यन्त भयंकर है तथा पिशाचयोनि भी बहुत दु:ख देने वाली है। अत: पूर्ण प्रयत्न करके पाप से बचना चाहिए ।'

इस प्रकार दोनों चिंतित होकर दु:ख के कारण दिन-प्रतिदिन सूखते जा रहे थे। दैवयोग से उन्हें माघ मास के शुक्लपक्ष की एकादशी की तिथि प्राप्त हो गयी। जया नाम से विख्यात वह तिथि सब तिथियों में उत्तम है। इस दिन उन दोनों ने सब प्रकार के आहार का त्याग किया, जल पान तक नहीं किया। किसी जीव की हिंसा नहीं की, यहाँ तक कि खाने के लिए वृक्ष से फल तक नहीं काटा। अविरत दु:ख से युक्त होकर वे दोनों एक पीपल के समीप बैठे रहे। सूर्यास्त हो गया। भूख-प्यास से उनके प्राण हर लेने वाली भयंकर रात्रि का समय आगया। लेकिन भूख-प्यास के कारण उन्हें नींद नहीं आयी।

अगले दिन सूर्यादय हुआ, द्वादशी का दिन आया। इस प्रकार उस पिशाच दंपति के द्वारा जया के उत्तम

व्रत का पालन हो गया। उन्होंने रात में जागरण भी कर लिया था। उस व्रत के प्रभाव से तथा भगवान विष्णु की कृपा से उन दोनों का पिशाचत्व दूर हो गया। पुष्पवन्ती और माल्यवान को अपना पूर्व स्वरुप प्राप्त हो गया। उनके हृदय में वही पुराना स्नेह उमड़ रहा था। उनके शरीर पर पहले की तरह ही दिव्य अलंकार शोभा पा रहे थे। वे दोनों मनोहर स्वरुप धारण करके विमान पर बैठकर स्वर्गलोक में चले गये। वहाँ देवराज इन्द्र के पास जाकर दोनों ने बड़ी प्रसन्नता के साथ उन्हें प्रणाम किया।

उन्हें इस रुप में उपस्थित देखकर इन्द्र को बड़ा विस्मय हुआ! इन्द्रने पूछा: बताओ, किस पुण्य के प्रभाव से तुम दोनों का पिशाचत्व दूर हुआ है? तुम मेरे शाप को प्राप्त हो चुके थे, फिर किस देवता ने तुम्हें उससे छुटकारा दिलाया है?'

माल्यवान बोला: स्वामिन् ! भगवान वासुदेव की कृपा तथा जया नामक एकादशी के व्रत से हमारा पिशाचत्व दूर हुआ है ।

इन्द्र ने कहा: तो अब तुम दोनों मेरे कहने से देवाहार ग्रहण करो। जो लोग एकादशी के व्रत में तत्पर और भगवान श्रीकृष्ण के शरणागत होते हैं, वे हमारे भी पूजनीय होते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं: राजन् ! इस कारण एकादशी का व्रत करना चाहिए। हे नृपश्रेष्ठ! जया ब्रह्महत्या का पाप भी दूर करनेवाली है। जिसने जया का व्रत किया है, उसने सब प्रकार के दान दे दिये और सम्पूर्ण यज्ञों का अनुष्ठान कर लिया। इस माहात्म्य के पढ़ने और सुनने से अग्निष्टोम यज्ञका फलप्राप्त होता है।

# गुरु पुष्यामृत योग

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हर दिन बदलने वाले नक्षत्र मे पुष्य नक्षत्र भी एक नक्षत्र है, एवं अन्दाज से हर २७वें दिन पुष्य नक्षत्र होता है। यह जिस वार को आता है, इसका नाम भी उसी प्रकार रखा जाता है।

इसी प्रकार गुरुवार को पुष्य नक्षत्र होने से गुरु पुष्य योग कहाजात है।

गुरु पुष्य योग के बारे में विद्वान ज्योतिषियो का कहना हैं कि पुष्य नक्षत्र में धन प्राप्ति, चांदी, सोना, नये वाहन, बही-खातों की खरीदारी एवं गुरु ग्रह से संबंधित वस्तुए अत्याधिक लाभ प्रदान करती है।

हर व्यक्ति अपने शुभ कार्यो में सफलता हेतु इस शुभ महूर्त का चयन कर सबसे उपयुक्त लाभ प्राप्त कर सकता है और अशुभता से बच सकता है।

अपने जीवन में दिन-प्रतिदिन सफलता की प्राप्ति के लिए इस अद्भुत महूर्त वाले दिन किसी भी नये कार्य को जेसे नौकरी, व्यापार या परिवार से जुडे कार्य, बंध हो चुके कार्य शुरू करने के लिये एवं जीवन के कोई भी अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र में कार्य करने से 99.9% निश्चित सफलता की संभावना होति है।

**25 फरवरी**
**सुबह 06:50**
**बजे से दोपहर**
**13:17 बजे तक**

- ❖ गुरुपुष्यामृत योग बहोत कम बनता है जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होता है । तब बनता है गुरु पुष्य योग।
- ❖ गुरुवार के दिन शुभ कार्यो एवं आध्यात्म से संबंधित कार्य करना अति शुभ एवं मंगलमय होता है।
- ❖ एक साधक के लिए बेहद फायदेमंद होता हैं **गुरुपुष्यामृत योग**।
- ❖ पुष्य नक्षत्र भी सभी प्रकार के शुभ कार्यो एवं आध्यात्म से जुडे कार्यो के लिये अति शुभ माना गया है।
- ❖ जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होता तब यह योग बन जाता है अद्भुत एवं अत्यंत शुभ फल प्रद अमृत योग।
- ❖ इस दिन विद्वान एवं गुढ रहस्यो के जानकार मां महालक्ष्मी की साधना करने की सलाह देते है।
- ❖ यह योग विशेष साधना के लिये अति शुभ एवं शीघ्र परीणाम देने वाला होता है।
- ❖ मां महालक्ष्मी का आह्वान करके अत्यंत सरलता से उनकी कृपा द्रष्टि से समृद्धि और शांति प्राप्त कि जासकती है।

## पुष्य नक्षत्र का महत्व क्यों हैं?

शास्त्रो में पुष्य नक्षत्र को नक्षत्रों का राजा बताया गया हैं। जिसका स्वामी शनि ग्रह हैं। शनि को ज्योतिष में स्थायित्व का प्रतीक माना गया हैं। अतः पुष्य नक्षत्र सबसे शुभ नक्षत्रो में से एक हैं।

यदि रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तो रवि पुष्य योग और गुरुवार को हो तो और गुरु पुष्य योग कहलाता हैं।

शास्त्रों में पुष्य योग को 100 दोषों को दूर करने वाला, शुभ कार्य उद्देश्यो में निश्चित सफलता प्रदान करने वाला एवं बहुमूल्य वस्तुओं कि खरीदारी हेतु सबसे श्रेष्ठ एवं शुभ फलदायी योग माना गया है।

गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग से सर्वार्थ अमृतसिद्धि योग बनता है। शनिवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग से सर्वार्थसिद्धि योग होता है। पुष्य नक्षत्र को ब्रह्माजी का श्राप मिला था। इसलिए शास्त्रोक्त विधान से पुष्य नक्षत्र में विवाह वर्जित माना गया है।

# सरस्वती जयंती (वंसत पंचमी)

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

16 फरवरी 2021 को हिन्दू पंचांग विक्रमी संवत् 2077 माघ मास शुक्ल पक्ष की पंचमी को वंसत पंचमी अर्थात सरस्वती पूजा के दिन मां सरस्वती की पूजा आरधना कर उनकी कृपा प्राप्त करने हेतु वर्ष के सर्व श्रेष्ठ दिनो में से एक हैं। विद्वानो के मत से वंसत पंचमी का दिन विभिन्न शुभ कार्यो के शुभ आरंभ हेतु अत्यंत शुभ माना जाता हैं।

वंसत पंचमी को सरस्वती जयंती, ऋषि पंचमी, श्री पंचमी इत्यादी नामो से भी मनाया जाता हैं।

वंसत पंचमी अर्थात वंसत ऋतु के आगमन का प्रथम दिन। विद्वानो के मत से वंसत ऋतु का मौसम मनुष्य के जीवन में सकारात्मक भाव, ऊर्जा, आशा एवं विश्वास को जगाता हैं। हिन्दू संस्कृति में वंसत ऋतु का स्वागत विद्या की देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना के साथ किया जाता हैं। इनके पूजन से विद्या एवं ज्ञान की प्राप्ति होती हैं।

वंसत पंचमी के दिन से भारत के कइ हिस्सो मे बच्चे को प्रथम अक्षर ज्ञान की शुरुवात की जाती है। एसी मान्यता है की वसंत पंचमी के दिन विद्यांभ करने से बच्चे की की वाणी में मां सरस्वती स्वयं वास करती और बच्चे पर जीवन भर कृपा वर्षाती हैं। एवं बच्चों में विद्या एवं ज्ञान का विकास होता हैं जिस्से बच्चें मे श्रेष्ठता, सदाचार, तेजस्विता जेसे सद्द गुणों का आगमन होना प्रारंभ होता हैं, और बच्चा उत्तम स्मरण शक्ति युक्त विद्वान होता हैं।

वंसत पंचमी के दिन देवी सरस्वती के अलवा भगवान विष्णु, श्री कृष्ण, कामदेव व रति की पूजा भी की जाती हैं। मान्यता हैं कि भगवान श्रीकृष्ण वसंत पंचमी के दिन प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होते हैं। इसी कारण से ब्रज में वसंत पंचमी के दिन से ही होली का उत्सव शुरू हो जाता है। वसंत पंचमी के दिन दांपत्य सुख की कामना से कामदेव और उनकी पत्नी रति की पूजा की जाती है। कामदेव की पूजा कर इसी पुरुषार्थ की प्राप्ति की होती है।

वंसत पंचमी के दिन नये व्यवसाय का शुभ आरंभ या व्यवसाय हेतु नयी शाखा का शुभ आरंभ करना अत्यंत शुभ माना जाता हैं। वसंत पंचमी के दिन पूजा आरधना से मां की कृपा से अध्यात्म ज्ञाना में वृद्धि होती हैं।

**सरस्वती पूजन:-** शास्त्र के अनुशार वंसत पंचमी के दिन विद्या की देवी सरस्वती का जन्म हुआ था । वंसत पंचमी के दिन ब्रह्माजी के मानस से देवी सरस्वती प्रकट हुई थी।

सरस्वती जी को बुद्धि, ज्ञान, संगीत और कला की देवी माना जाता हैं। पौराणिक काल में भी विद्या प्राप्ति के लिए माता-पिता अपने बच्चे को ऋषि-मुनियों के आश्रम एवं गुरुकुल में भेजते थे।

वसंत पंचमी के दिन सुबह स्नान इत्यादी के पश्चयात स्वच्छ कपडे पहन कर सरस्वती की पूजा-अर्चना की जाती है।
वसंत पंचमी के दिन वैदिक मंत्र, सरस्वची कवच, स्तुति आदि से देवी की प्रार्थना करना लाभदायक होता हैं।
वसंत पंचमी के दिन सरस्वती की कृपा प्राप्त हो इस लिये बच्चो की किताबे एवं लेखनी (कलम) की पूजा की जाती है।
वसंत पंचमी के दिन बालकों को अक्षर ज्ञान एवं विद्यारंभ भी कराने कि परंपरा हैं।

- नित्य कर्म से निवृत होकर श्वेत वस्त्र धारण करके उत्तर-पूर्व दिशा में या अपने पूजा स्थान में सरस्वती का चित्र-मूर्ति अपने सम्मुख स्थापन कर थम पूजा का प्रारंभ श्री गणेशजी की पूजा से करे तत पश्यात ही मां सरस्वती की पूजा करें।
- मां सरस्वती को श्वेत रंग अत्यंत प्रिय है। इस लिये पूजा में ज्यादा से ज्यादा श्वेत रंग की वस्तुओं का प्रयोग करें।
- पूजा मे सफेद वस्त्र, स्फटिक माला, चंदन, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, नैवेद्य मे श्वेत मिष्ठान आदी का प्रयोग करे जिस्से मां की कृपा शीघ्र प्राप्त हो
- मां सरस्वती के वैदिक अथवा बीज मंत्रो का यथासंभव जाप करे। और सरस्वती स्तोत्र, सरस्वती अष्टोत्तरनामावली, स्तोत्र एवं आरती कर के पूजा संपन्न करे।

## वसंत पंचमी की कथा:

एक दिन ब्रह्माजी समस्त लोक का अवलोकन करते हुवे भूलोक आये। ब्रह्माजी ने भूलोक पर समस्त प्राणी-जंतुओं को मौन, उदास और क्रिया हिन अवस्था में देखा। जीवलोक की यह दशा देखकर ब्रह्माजी अधिक चिंतित होगएं और सोचने लगे इन जीवो के कल्याण के लिये क्या उपाय किया जाएं? जिस्से सभी प्राणी एवं जीव आनंद और प्रसन्न होकर झुमने लगे। मन में इस विषय में चिंतन मनन करते हुए उन्होंने कमल पुष्पों पर जल छिड़का तो, उस पुष्प में से देवी सरस्वती प्रकट हुई। देवी सफेद वस्त्र धारण किए, गले में कमलों की माला धारन किये, हाथों में वीणा एवं पुस्तक धारण किए हुए थी।

भगवान ब्रह्मा ने देवी से कहा, आप समस्त प्राणियों के कंठ में निवास कर उन्हें वाणी प्रदान करो। आज से सभी को जीव को चैतन्य एवं प्रसन्न करना आपका काम होगा और विश्व में आप भगवती सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध होगी। आपके द्वारा इस लोक का कल्याण किये जाने के कारण विद्वत समाज आपका आदर एवं पूजा करेगा।

वंसत पंचमी के दिन ज्ञान और विद्या की देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना की जाती है। देवी सरस्वती की आराधना से विद्या आती है, विद्या से विनम्रता, विनम्रता से पात्रता, पात्रता से धन और धन से सुख प्राप्त होता है।

# हिन्दु धर्म में सरस्वती उपासना का महत्व

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म के वैदिक साहित्य में मंत्र उपासना का महत्वपूर्ण स्थान हैं। आज के आधुनिक युग में लगातार संशोधित हो रहे वैज्ञानिक शोध से यह सिद्ध हो चूका अनुभूत सत्य की मन्त्रों में अद्भुत शक्ति होती हैं। लेकिन मंत्र की सकारात्मक शक्ति जाग्रह हो इस लिए मंत्र के प्रयोग का उचित ज्ञान, मंत्र की क्रमबद्धता और मंत्र का शुद्ध उच्चारण अति आवश्यक होता हैं।

जैसे भीड में जाते हुए या बैठे हुए व्यक्ति में से जिस व्यक्ति के नाम का उच्चारण होता हैं। उस व्यक्ति का ध्यान ही ध्वनि की और गति करता हैं। अन्य लोग उसी अवस्था में चल रहे होते हैं या बैठे रहते हैं अथवा विशेष ध्यान नहीं देते हैं। उसी प्रकार सोएं हुए व्यक्तियों में जिस व्यक्ति के नाम का उच्चारण होता हैं केवल उसी व्यक्ति की निंद्रा भंग होती हैं अन्य लोग सोएं रहते हैं या विशेष ध्यान नहीं देते। उसी प्रकार देवी-देवता के विशेष मंत्र का शुद्ध उच्चारण कर निश्चित देवी-देवता की शक्ति को जाग्रत किया जाता सकता हैं।

देवी सरस्वती हिन्दू धर्म के प्रमुख देवी-देवताओ में एक हैं, जिसे मन, बुद्धि, ज्ञान और कला, की अधिष्टात्री देवी माना जाता हैं। देवी का स्वरुप चन्द्रमा के समान श्वेत उज्जवल, श्वेतवस्त्र धारी, श्वेत हंस पर विराजित, चार भुजाधारी, हाथ में वीणा, पुस्तक, माला लिए हैं और एक हाथ वरमुद्रा में हैं। मस्तक पर रत्न जडित मुगट शोभायमान हैं।

देवी सरस्वती के पूजन से जातक को विद्या, बुद्धि व नाना प्रकार की कलाओं में सिद्ध एवं सफलता प्राप्त होती हैं। सरस्वती ब्रह्मा की मानस पुत्री हैं।

शास्त्रो में देवी सरस्वती को सरस्वती, महासरस्वती, नील सरस्वती कहा गया हैं। देवी सरस्वती की स्तुति ब्रह्मा, विष्णु, महेश, देवराज इन्द्र और समस्त देवगण करते हैं।देवी सरस्वती की कृपा से जड से जड व्यक्ति भी विद्वान बन जाते हैं। हमारे धर्म शास्त्रो में इस के उदाहरण भरे पडे हैं। जिस में से एक उदाहरन कालीदास जी का हैं। देवी सरस्वती का विशेष उत्सव माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को अर्थात् वसन्त पंचमी को मनाया जाता हैं।

# Blended Premium Essential Oils

- Wealth Improvement (For Good Income Flow From Various Sources)
- Increase of fortune (For luck to grow without interruption)
- Increased of Attract Power (For improve the power of attraction and strengthen relationships)
- Attraction of Wealth (For Accumulation of Good Wealth )
- Family Happiness (For Peace, Prosperity and Happy Family Life)
- **Business Growth (For Increase Business and Profits)**
- Good Education (For Getting Best Education)
- Happy Married Life (For Happiness and Increase Marital Harmony)
- Protection (Protection from Various Negative Energy)
- Positivity (For Remove Negative Thoughts and Increase Positive Thoughts)
- Success (For Success in competition and Good Result in exam)
- High Speed (For Sell Products Very Fast, and Wish Fulfilment Very Fast.)
- Vastu Special (For Balancing Special Elements Increase Prosperity at home)
- Happiness of Mind and Body (For Increase Happiness of Mind, Body & Soul)
- Sleep Well (For Balance Sleep Cycle and Healthy Sleep)

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Our Website : www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvakaryalay.in

# सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

**कवच के प्रमुख लाभ**: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

# मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

| | |
|---|---|
| काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900 | कमल गट्टे की माला - Rs- 370 |
| माया जाल- Rs- 251, 551, 751 | हल्दी माला - Rs- 280 |
| धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550) | तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460 |
| घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751 | नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above |
| हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370 | नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730 |
| लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190 | हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910 |
| नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145 | मूंगे की माला Rs- 1050, 1900 & Above |
| स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250 | पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above |
| सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910 | वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460 |
| रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550, | रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450 |
| मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above | विधुत माला - Rs- 190, 280 |
| कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above | मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online \| Order Now |

# मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

**गुरुत्व कार्यालय** मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

**मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00**

# परिक्षा में सफलता प्राप्ति हेतु

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

- रोज सुभह स्नान आदिसे निवृत होकर स्वच्छ कपडे पहन कर अपने इष्ट के सम्मुख ३ अगरबत्ती जलाकर अपनी मनोकामना हेतु उनसे प्राथना करे। उसके बाद ही पढाई आरंभ करें।
- कोई भी एक सरस्वती मंत्र के ३,५ मिनिट जाप कर के अपनी पढाई शुरु करें।

# विद्याध्ययन आवश्यक क्यों?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

भारतीय शास्त्रकारो ने विद्या विहीन मनुष्य की तुलना पशु से की हैं। विद्या एवं ज्ञान ही मनुष्य की विशेषता हैं। पशुओं की तुलना में मनुष्य में ज्ञान शक्ति के कारण कुछ विशेषता हैं। परंतु अज्ञानी मनुष्य का जीवन निश्चय रुप से ही पशुओं से गया-गुजरा हैं। अज्ञानी मनुष्य को अपने जीवन में किसी दिशा में प्रगति करने का अवसर नहीं मिलता हैं।

व्यक्ति अपने जीवन निर्वाह की महत्वपूर्ण आवश्यकता भी कठिनाई से पूरी कर पाता हैं। उसे अनेक अभावों, असुविधा और आपत्तियों से भरी जिन्दगी जीनी पड़ सकती हैं। जिस व्यक्ति में ज्ञान की कमी होती हैं, उसको जीवन के हर क्षेत्र में सर्वत्र अभाव होते रहते हैं। व्यक्ति की उचित प्रगति के सभी रास्ते उसे बंध से प्रतित होते हैं।

कोई भी मनुष्य अपने जीवन में विद्या से विहीन एवं अज्ञानी न रहें। इसलिए हमारे विद्वान ऋषीमुनीयों ने प्राचिन काल से ही हर व्यक्ति के लिये उपयोगी विद्या प्राप्त करने की आवश्यकता एवं अनिवार्य बताई है।

मनुष्य को प्राप्त होने वाली विद्या उसके ज्ञान का मुख्य आधार हैं। इसलिये जिस व्यक्ति को विद्या नहीं आती उसे ज्ञान प्राप्ति से वंचित रहना पड़ता हैं।

हमारे शास्त्रो के अनुशार व्यक्ति को जीवन में कष्ट और क्लेशों से छुटकारा केवल ज्ञान से ही मिल सकता है। क्योकी अज्ञानी मनुष्य तो जटिल बंधनो में ही बँधा रहता हैं। उन बंधनो से बाहर निकलने का उचित प्रयास नहीं कर पाता और उसका मन, शरीर के बंधनो में पड़े हुए बंदी की भांति कष्ट भोगने पड़ते हैं। व्यक्ति ज्ञान के अभाव के कारण कष्टो को सहता ही रहता हैं और उसे अंधकार में भटकना ही पड़ता हैं, व्यक्ति को सही मार्ग ज्ञान प्रकाश की प्राप्ति होने पर ही मिलता हैं।

सृष्टी के हर पशु-पक्षि-प्राणी को खाने, सोने, बच्चे करने आदि शारीरिक प्रवृतियों को करने का ज्ञान प्रकृति द्वारा प्राप्त हैं। इन प्रवृति या क्रियाओं के करने से किसी को ज्ञानी नहीं कहा जा सकता उसे अज्ञानी ही कहा जाएगा। क्योकि हर देहधारी जीव में सांस लेने, आहार पचाने, जमाने और खर्चने की प्रमुख जानकारियाँ किसी ना किसी रूप में स्वतः ही बिना प्रयास के ही मिली हुई होती हैं। जो जीव इतना ही जानते हैं। वस्तुतः वे देहीक कियाओं की जानकारी तक ही सीमित हैं। ज्ञान वह हैं, जिस्से मनुष्यने अब तक संशोधन, परिवर्तन द्वारा उपलब्धियों को प्राप्त कर मानव ने समग्र विश्व का विकास किया हैं, यह विकसिता ही मनुष्य का ज्ञान हैं।

## शिक्षण से व्यक्तित्व का विकास होता हैं।

जीवन में व्यक्ति को स्वाभाविक संस्कार एवं वंश परम्परा से चतुरता तो एक सीमा तक मिली हुई हैं, परंतु व्यक्ति का विकास उसके प्रयत्नों से ही संभव होता हैं। ज्ञान के बीज इश्वरीय कृपा से मानवीय चेतना में बचपन से ही विद्यमान हो जाते हैं। परंतु उस ज्ञान का विकास हर व्यक्ति नहीं कर पाता हैं। उसका विकार व्यक्ति के आस-पास की अनुकूल

एवं प्रतिकूल परिस्थितीयों के आधार पर होता हैं। विद्वानो के मत से बिना दूसरों से कुछ सिखे मनुष्य की बुद्धिमत्ता किसी काम की नहीं हैं।

जैसे किसी छोटे बच्चे को जिन परिस्थितियों में रहना पड़ता हैं, बच्चा उसी प्रकार परिस्थितियों के अनुरुप ढल जाता है।

जेसे किसी अज्ञानी के बच्चे और पढे-लिखे सुसंस्कृत के बच्चे में जो अन्तर देखा जाता हैं, वह अंतर बच्चे में जन्मजात नहीं होता वह अंतर परीस्थिती, वातावरण और संगति के प्रभाव से होता है।

जिस व्यक्ति को जीवन में उपयुक्त सुविधायें प्राप्त हो जाती हैं, वह व्यक्ति सुविकसित जीवन जीने की परिस्थियाँ प्राप्त कर लेता हैं। उसी प्रकार जिस व्यक्ति को जीवन में उपयुक्त सुविधा से वंचित रहना पड़ता हैं, वह लोग मानसिक दृष्टि से गई-गुजरी दशा में रह जाते हैं। इस लिये जो व्यक्ति को नीम्न परिस्थियों में पड़ा नहीं रहना है, उन के लिये विद्या अध्ययन करके अपने जीवन में उत्कर्ष की दिशा में आगे बढ़ना संभव हो सकता हैं।

दैनिक दिनचर्या, कुंटुंब एवं सामाजिक परिवेश के संपर्क में रहकर जो सीख, जो ज्ञान प्राप्त होता हैं वह मनुष्य के विकास हेतु नाकाफि हैं अथवा प्राप्त होने वाला ज्ञान सीमित दायरे के कारण बहुत थोड़ा होता हैं। उस थोडे ज्ञान से व्यक्ति के विकास का काम नहीं चल सकता। क्योकि विकास हेतु मनुष्य की अबतक की जो उपलब्धिया हैं, अबतक जिस विशाल ज्ञान का संग्रह किया हैं, उससे भी लाभ उठाना आवश्यक होता हैं। जो सीमित दायरे में या कुंटुंब या परिवेश में प्राप्त होना संभव नहीं हैं। व्यक्ति के विकास का एक ही उपाय हैं, विद्याध्ययन।

क्योकि व्यक्ति के द्वारा कमाया और जमा किया गया धन तो खर्च होता रहता हैं और कष्ट होते रहे हैं, लेकिन व्यक्ति के द्वारा उपार्जित ज्ञान सुरक्षित रहता हैं।

जेसे किसी व्यक्ति के पास तो अल्प ज्ञान होता है, जिससे पेट भरने की आवश्यकता की पूर्ति जा सकती हैं। इस लिये जीवन में विद्याध्ययन अति आवश्यक मानी गई हैं।

# देवी सरस्वतीका ध्यान मंत्र

*आरूढा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रं*
*वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयं पुस्तकं ज्ञानगम्या।*
*सा वीणां वादयन्ती स्वकरकरजपः शास्त्रविज्ञानशब्दः*
*क्रीडन्ती दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना॥*
*श्वेतपद्मासना देवी श्वेतगन्धानुलेपना ।*
*अर्चिता मुनिभिः सर्वैर्षिभिः स्तूयते सदा॥*
*एवं ध्यात्वा सदा देवीं वाञ्छितं लभते नरः॥*

अर्थातः जो श्वेत हंसपर सवार होकर आकाशमें विचरण करती हैं, जिनके दाहिने हाथमें अक्षमाला और बायें हाथमें दिव्य स्वर्णमय वस्त्रसे आवेष्टित पुस्तक सुशोभित है, जो ज्ञानगम्या हैं, जो वीणावादन करती हुई और अपने हाथकी करमालासे शास्त्रोक्त बीज मन्त्रोंका जप करती हुई क्रीडारत हैं, जिनका रूप दिव्य है तथा जो अपने हाथमें कमल धारण करती हैं, वे सरस्वती देवी मुझपर प्रसन्न हों। जो देवी श्वेत कमलपर आसीन हैं, जिनके शरीर पर श्वेत चन्दन का अनुलेप है, मुनिगण जिनकी उपासना करते हैं तथा सभी ऋषि सदा जिनका स्तवन करते हैं। इस प्रकार नियमित देवीका ध्यान करके मनुष्य मनोवांछित लाभ प्राप्त कर लेता है।

# सरस्वती अष्टोत्तरनामावलीः ॥

1. ॐ सरस्वत्यै नमः ॥
2. ॐ महाभद्रायै नमः ॥
3. ॐ महामायायै नमः ॥
4. ॐ वरप्रदायै नमः ॥
5. ॐ श्रीप्रदायै नमः ॥
6. ॐ पद्मनिलयायै नमः ॥
7. ॐ पद्माक्ष्यै नमः ॥
8. ॐ पद्मवक्त्रकायै नमः ॥
9. ॐ शिवानुजायै नमः ॥
10. ॐ पुस्तकभृते नमः ॥
11. ॐ ज्ञानमुद्रायै नमः ॥
12. ॐ रमायै नमः ॥
13. ॐ परायै नमः ॥
14. ॐ कामरूपायै नमः ॥
15. ॐ महाविद्यायै नमः ॥
16. ॐ महापातक नाशिन्यै नमः ॥
17. ॐ महाश्रयायै नमः ॥
18. ॐ मालिन्यै नमः ॥
19. ॐ महाभोगायै नमः ॥
20. ॐ महाभुजायै नमः ॥
21. ॐ महाभागायै नमः ॥
22. ॐ महोत्साहायै नमः ॥
23. ॐ दिव्याङ्गायै नमः ॥
24. ॐ सुरवन्दितायै नमः ॥
25. ॐ महाकाल्यै नमः ॥
26. ॐ महापाशायै नमः ॥
27. ॐ महाकारायै नमः ॥
28. ॐ महांकुशायै नमः ॥
29. ॐ पीतायै नमः ॥
30. ॐ विमलायै नमः ॥
31. ॐ विश्वायै नमः ॥
32. ॐ विद्युन्मालायै नमः ॥
33. ॐ वैष्णव्यै नमः ॥
34. ॐ चन्द्रिकायै नमः ॥
35. ॐ चन्द्रवदनायै नमः ॥
36. ॐ चन्द्रलेखाविभूषितायै नमः ॥
37. ॐ सावित्र्यै नमः ॥
38. ॐ सुरसायै नमः ॥
39. ॐ देव्यै नमः ॥
40. ॐ दिव्यालंकारभूषितायै नमः ॥
41. ॐ वाग्देव्यै नमः ॥
42. ॐ वसुदायै नमः ॥
43. ॐ तीव्रायै नमः ॥
44. ॐ महाभद्रायै नमः ॥
45. ॐ महाबलायै नमः ॥
46. ॐ भोगदायै नमः ॥
47. ॐ भारत्यै नमः ॥
48. ॐ भामायै नमः ॥
49. ॐ गोविन्दायै नमः ॥
50. ॐ गोमत्यै नमः ॥
51. ॐ शिवायै नमः ॥
52. ॐ जटिलायै नमः ॥
53. ॐ विन्ध्यावासायै नमः ॥
54. ॐ विन्ध्याचलविराजितायै नमः॥
55. ॐ चण्डिकायै नमः ॥
56. ॐ वैष्णव्यै नमः ॥
57. ॐ ब्राह्मयै नमः ॥
58. ॐ ब्रह्मज्ञानैकसाधनायै नमः ॥
59. ॐ सौदामन्यै नमः ॥
60. ॐ सुधामूर्त्यै नमः ॥
61. ॐ सुभद्रायै नमः ॥
62. ॐ सुरपूजितायै नमः ॥
63. ॐ सुवासिन्यै नमः ॥
64. ॐ सुनासायै नमः ॥
65. ॐ विनिद्रायै नमः ॥
66. ॐ पद्मलोचनायै नमः ॥
67. ॐ विद्यारूपायै नमः ॥
68. ॐ विशालाक्ष्यै नमः ॥
69. ॐ ब्रह्मजायायै नमः ॥
70. ॐ महाफलायै नमः ॥
71. ॐ त्रयीमूर्तये नमः ॥
72. ॐ त्रिकालज्ञायै नमः ॥
73. ॐ त्रिगुणायै नमः ॥
74. ॐ शास्त्ररूपिण्यै नमः ॥
75. ॐ शंभासुरप्रमथिन्यै नमः ॥
76. ॐ शुभदायै नमः ॥
77. ॐ स्वरात्मिकायै नमः ॥
78. ॐ रक्तबीजनिहन्त्र्यै नमः ॥
79. ॐ चामुण्डायै नमः ॥
80. ॐ अम्बिकायै नमः ॥
81. ॐ मुण्डकायप्रहरणायै नमः ॥
82. ॐ धूम्रलोचनमदनायै नमः ॥
83. ॐ सर्वदेवस्तुतायै नमः ॥
84. ॐ सौम्यायै नमः ॥
85. ॐ सुरासुर नमस्कृतायै नमः ॥
86. ॐ कालरात्र्यै नमः ॥
87. ॐ कलाधरायै नमः ॥
88. ॐ रूपसौभाग्यदायिन्यै नमः ॥
89. ॐ वाग्देव्यै नमः ॥
90. ॐ वरारोहायै नमः ॥
91. ॐ वाराह्यै नमः ॥
92. ॐ वारिजासनायै नमः ॥
93. ॐ चित्रांबरायै नमः ॥
94. ॐ चित्रगन्धायै नमः ॥
95. ॐ चित्रमाल्यविभूषितायै नमः ॥
96. ॐ कान्तायै नमः ॥
97. ॐ कामप्रदायै नमः ॥
98. ॐ वन्द्यायै नमः ॥
99. ॐ विद्याधरसुपूजितायै नमः ॥
100. ॐ श्वेताननायै नमः ॥
101. ॐ नीलभुजायै नमः ॥
102. ॐ चतुर्वर्गफलप्रदायै नमः ॥
103. ॐ चतुरानन साम्राज्यायै नमः॥
104. ॐ रक्तमध्यायै नमः ॥
105. ॐ निरंजनायै नमः ॥
106. ॐ हंसासनायै नमः ॥
107. ॐ नीलजङ्घायै नमः ॥
108. ॐ ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः॥

**॥इति श्री सरस्वति अष्टोत्तरशत नामावलिः॥**

# ज्योतिष में विद्या प्राप्ति एवं उच्च शिक्षा के योग

संकलन गुरुत्व कार्यालय

जन्म कुंडली का अध्ययन कर मालूम किया जा सकता है कि जातक में उच्च शिक्षा का योग हैं नहीं हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुशार विद्या का विचार जन्म कुंडली में मुख्यतः पंचम भाव से किया जाता हैं। विद्या एवं वाणी का निकटस्थ संबध होता हैं। अतः विद्या योग का विचार करने के लिए द्वितीय भाव भी सहायक होता हैं।

चन्द्र और बुध की स्थिति से विद्या प्राप्ति के लिये उपयोगी जातक का मानसिक संतुलन एवं मन की स्थिती का आंकलन किया जाता हैं। कई विद्वानो के अनुशार बुध तथा शुक्र की स्थिति से व्यक्ति की विद्वता एवं सोचने की शक्ति का विचार किया जाता है।

दशम भाव से विद्या से अर्जित यश का विचार किया जाता है।

**जातक को उच्च शिक्षा में सफलता प्राप्त होगी या नहीं। यदि अवरोध उत्पन्न करने वाले योग हैं तो उसे दूर करने के उपाय क्या हैं?**

आज के आधुनिक युग में स्वयं के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा की भूमिका अहम होती हैं। आज के दौर में चाहे स्त्री हो या पुरुष शिक्षा सब के लिए आवश्यक होती है।

विद्वानो के मत से ज्योतिष शास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार शिक्षा का मुख्य विचार द्वितीय एवं पंचम भावों तथा इन भाव के स्वामी ग्रह की स्थिति से किया जाता हैं। जातक की वाणी एवं स्मरण शक्ति का विचार बुध एवं ज्ञान का विचार गुरु से किया जाता हैं।

**उच्च शिक्षा के योग**

# विद्या प्राप्ति में रुकावट के योग

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

**शिक्षा प्राप्ति में बाधा के योग**

जन्म कुंडली में उच्च शिक्षा का योग होने पर भी कभी-कभी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता। इस का कारण हैं, शिक्षा प्राप्ति में रुकावट करने वाले योग।

- विद्वानो के मत से ज्यादातर शिक्षा प्राप्ति के समय यदि राहु की महादशा चल रही हो पढ़ाई में रुकावट आती है।
- यदि पंचमेश 6, 8 या 12 वें भाव में स्थित हो या किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित हो या अशुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो जातक उचित शिक्षा प्राप्त नहीं कर या उसकी शिक्षा प्राप्ति बाधा आती हैं।
- यदि जातक में गुरु या बुध 3, 6, 8 या 12 वें भाव में स्थित हो, शतृगृही हो, तो शिक्षा प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करता है।

**फलदीपिका के अनुशार**

वित्तम् विद्या स्वान्नपानानि भुक्तिम् दक्षाक्ष्यास्थम् पत्रिका वाक्कुटुबम्म॥ (फलदीपिका अध्याय १ श्लोक १०)

अर्थातः धन, विद्या, वाणी एवं स्वयं के अधिकार की वस्तु इत्यादि का विचार द्वितीय भाव से करना चाहिए।

- यदि जन्म कुंडली में अष्टम भाव में नीच ग्रह, अशुभ, पापी या क्रूर ग्रह स्थित होने से भी जातक कई बार उच्च शिक्षा की प्राप्ति कर लेता हैं। इस स्थिती में जातक को दूरस्थ स्थान या विदेश में विद्याध्ययन के योग बनते हैं।
- यदि जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो या अशुभ ग्रहो का प्रभाव हो, तो विद्या प्राप्ति में बाधा हो सकती हैं।
- यदि जन्म कुंडली में सूर्य, शनि एवं राहु की अलग-अलग द्रष्टी के प्रभाव के कारण विद्या प्राप्ति में अधिक रुकावटे आती हैं।
- यदि जन्म कुंडली में अकेला गुरु द्वितीय भाव में स्थित हो, तो जातक ने प्राप्त कि हुई विद्या का उचित उपयोग नहीं हो पाता हैं।
- यदि जन्म कुंडली में अकेला शुक्र द्वितीय भाव में स्थित हो, तो जातक के उच्च शिक्षा के योग बनते हैं।
- यदि जन्म कुंडली में शुक्र अष्टम भाव में स्थित हो कर द्वितीय भाव पर द्रष्टी होने पर शिक्षा प्राप्ति में बाधाएं हो सकती हैं।
- यदि जन्म कुंडली में राहु 6,8 या 10 भाव में स्थित हो, तो जातक का विद्या अध्ययन में मन नहीं लगता, यदि विद्या अध्ययन किसी प्रकार से पूर्ण करले, तो भी जातक उस विद्या का उचित इस्तेमाल नहीं कर पाता हैं।
- यदि जन्म कुंडली में शनि पंचम भाव या अष्टम भाव में स्थित हो, तो भी शिक्षा अधुरी रहती हैं या शिक्षा प्राप्ति में किसी ना किसी कारणो से बाधाएं उत्पन्न होती हैं। जातक प्राप्त शिक्षा का उचित इस्तेमाल नहीं कर पाता हैं।

**शिक्षा में अवरोध उत्पन्न करने वाले कारण**

- यदि जातक में राहु अगर पंचम भाव में पंचमेश से युत या दृष्ट हो और अशुभ ग्रह से पीड़ित हो, तो विद्या ग्रहण में बाधा आती है।

# ज्योतिष और विद्या विचार

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हर माता-पिता की कामना होती है कि उनका बच्चें परीक्षा में उच्च अंकों से उत्तीर्ण हो एवं उसे सफलता मिले। उच्च अंकों का प्रयास तो सभी बच्चें करते हैं पर कुछ बच्चें असफल भी रह जाते हैं। कई बच्चों की समस्या होती है कि कड़ी मेहनत के बावजूद उन्हें अधिक याद नहीं रह पाता, वे कुछ जबाव भूल जाते हैं। जिस वजह से वे बच्चें परीक्षा में उच्च अंकों से उत्तीर्ण नहीं होपाते या असफल होजाते हैं।

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार विद्या का विचार जन्म कुंडली में पंचम भाव से किया जाता हैं। विद्या एवं वाणी का निकटस्थ संबध होता हैं। अतः विद्या योग का विचार करने के लिए द्वितीय भाव भी सहायक होता हैं।

चन्द्र और बुध की स्थिति से विद्या प्राप्ति के लिये उपयोगी जातक का मानसिक संतुलन एवं मन की स्थिती का आंकलन किया जाता हैं। कई विद्वानो के अनुशार बुध तथा शुक्र की स्थिति से व्यक्ति की विद्वता एवं सोचने की शक्ति का विचार किया जाता है।

- ❖ शास्त्रो के अनुशार बुध विद्या, बुद्धि और ज्ञान का स्वामी ग्रह हैं, इस लिये 12 वर्ष से 24 वर्ष की उम्र विद्याध्ययन की होती है, चाहे वह किसी प्रकार की विद्या हो, इस अविध को बुध का दशा काल माना जाता हैं।
- ❖ जातक में विद्या की स्थिरता, अस्थिरता एवं विकास का आंकलन बृहस्पति (गुरु) से किया जाता हैं।
- ❖ विदेशी भाषा एवं शिक्षा का विचार शनि की स्थिति से किया जाता हैं।
- ❖ ज्योतिष के अनुशार असफलता का कारण बच्चें की जन्मकुंडली में चंद्रमा और बुध का अशुभ प्रभाव है।
- ❖ चंद्रमा और बुध का संबंध विद्या से हैं, क्योकि मन-मस्तिष्क का कारक चंद्रमा है, और जब चंद्र अशुभ हो तो चंचलता लिए होता है तो मन-मस्तिष्क में स्थिरता या संतुलन नहीं रहता हैं, एवं बुध की अशुभता की वजह से बच्चें में तर्क व कुशाग्रता की कमी आती है। इस वजह से बच्चें का मन पढाई मे कम लगता हैं और अच्छे अंकों से बच्चा उत्तीर्ण नहीं हो पाता।

भारतीय ऋषि मुनिओं ने विद्या का संबंध विद्या की देवी सरस्वती से बताय हैं। तो जिस बच्चें की जन्मकुंडली में चंद्रमा और बुध का अशुभ प्रभावो हो उसे विद्या की देवी सरस्वती की कृपा भी नहीं होती। एसे मे मां सरस्वती को प्रसन्न कर उनकी कृपा प्राप्त चंद्रमा और बुध ग्रहों के अशुभ प्रभाव कम कर शुभता प्राप्त की जा सकती है।

मां सरस्वती को प्रसन्न कर उनकी कृपा प्राप्त करने का तत्पर्य यह कतई ना समजे की सिर्फ मां की पूजा-अर्चना करने से बच्चा परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो एवं उसे सफलता मिल जायेगी क्योकि मां सरस्वती उन्हीं बच्चों की मदद करती हैं, जो बच्चे मेहनत मे विश्वास करेते और मेहनत करते हैं। बिना मेहनत से कोइ मंत्र-तंत्र-यंत्र परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने मे सहायता नहीं करता है। मंत्र-तंत्र-यंत्र के प्रयोग से एक तरह की सकारत्मक सोच उत्पन्न होती है जो बच्चें को पढाई मे उस्की स्मरण शक्ती का विकास करती हैं।

- ❖ जन्म कुंडली में यदि बुध स्वग्रही, मित्रग्रही, उच्चस्थ हो या शुभ ग्रहो से द्रष्ट हो तो जातक की लिखावट एवं लेखन कला उच्च कोटी कि होती हैं।
- ❖ जन्म कुंडली में पंचम भाव में यदि बृहस्पति (गुरु) अकेला स्थित हो तो जातक के विद्या प्राप्ति स्थाई या अस्थाई रुप से प्राभावित हो सकती हैं
- ❖ जन्म कुंडली में पंचम भाव में बुध एवं शुक्र की युति को भी विद्या प्राप्ति के लिये बाधन माना गया हैं।
- ❖ जन्म कुंडली में पंचम भाव का स्वामी 6,8 या 12 भाव में हो तो जातक की मध्य भाग कि माध्यमिक शिक्षा प्राभावित हो सकती हैं।
- ❖ जन्म कुंडली में बलवान शनि का प्रभाव भी परीक्षा में हमेशा माना गया हैं। इस योग में ज्यादातर बच्चे परीक्षा में असफल होते देखे गए हैं।

# प्रश्न ज्योतिष से जाने विद्या प्राप्ति के योग

संकलन गुरुत्व कार्यालय

**ज्योतिष शास्त्र में कुण्डली के पंचम भाव को महत्वपूर्ण माना जाता हैं। क्योकि पंचम भाव जातक के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। क्योकि** पंचम भाव शिक्षा, बुद्धि और ज्ञान का भाव है, जिससे जातक के जीवन की दिशा निर्धारित होती हैं। ज्योतिष में पंचम भाव को त्रिकोण स्थान भी कहा जाता हैं। पंचम भाव को ज्योतिष में बहुत ही शुभ माना गया है। जातक के शिक्षा से सम्बन्ध में भी विचार पंचम भाव से ही किया जाता हैं। इस लिए प्रश्न ज्योतिष या प्रश्न कुंडली से शिक्षाका आंकलन करने हेतु भी पंचम भाव ही प्रमुख माना गया हैं।

पश्न ज्योतिष में शिक्षा का आंकलन करने हेतु लग्न में स्थित ग्रह एवं लग्नेश की स्थिती, पंचम भाव में स्थित ग्रह एवं पंचमेश की स्थिती तथा शिक्षा के कारक ग्रह बुध एवं बृहस्पति की स्थिति से विद्या का आंकल किया जासकता हैं।

प्रश्न कुंडली में लग्न, लग्नेश, पंचम भाव, पंचमेश, बुध और बृहस्पति यदि शुभ ग्रहो के साथ हो या शुभ ग्रहो से द्रष्ट हो तो शिक्षा के संबंधित कार्यो में बड़ी सफलता अवश्य मिलती हैं।

प्रश्न कुंडली में लग्न, लग्नेश, पंचम भाव, पंचमेश, बुध और बृहस्पति यदि कमजोर स्थिति में हों या या अशुभ ग्रहो से युक्त या द्रष्टी के कारण पीडित हो, तो शिक्षा संबंधित कार्यो में रूकावटों का सामना करना पड सकता हैं।

प्रश्न कुंडली का विश्लेषण करते समय अन्य शुभ, अशुभ ग्रहों का दृष्टि या युति संबंध एवं संबंधित ग्रह के मित्र एवं शत्रु ग्रहो का उनपर प्रभाव देखना भी अति आवश्यक होता हैं।

**नोट:** ज्योतिष शास्त्रो के अनुशार लग्न के साथ में भाव कारक भी बदल जाते हैं। इस लिए प्रश्न कुंडली का विश्लेषण सावधानी से करना उचित रहता हैं। विद्वानो के अनुशार प्रश्न कुंडली का विश्लेषण करते समय संबंधित भाव एवं भाव के स्वामी ग्रह अर्थातः भावेश एवं भाव के कारक ग्रह को ध्यान में रखते हुए आंकलन कर किया गया विश्लेषण स्पष्ट होता हैं। प्रश्न कुंडली का फलादेश करते समय हर छोटी छोटी बातों का ख्याल रखना आवश्यक होता हैं अन्यथा विश्लेषण किये गये प्रश्न का उत्तर स्टिक नहीं होता।

# सरस्वती की कृपा से वरदराज महापंडित हो गये।

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

संस्कृत के महापण्डित वरदराज का मूल नाम तो कुछ और था लेकिन अपने वह बाल्यकाल में पढने में कामजोर थे। इस कारण कुछ लोग उन्हें मंदबुद्धि बालक समझते थे और लोग उसका मजाक उड़ाते थे, कोई उन्हेम मंदबुद्धि कहता तो कोई मुर्ख कहता था। तथा उनकें सहपाठी भी उन्हें बरधराज (अर्थात बैलों का राजा) कहा करते थे।

बाल्यकाल में उनकी स्मरणशक्ति अत्यंत दुर्बल थी। उन्हें कई दिनोंमें केवल एक सूत्र कण्ठस्थ हो पाता था। वरदराज पाँच वर्षके थे, तभी पढ़नेके लिये अपने गुरुजी भट्टोजि दीक्षितके गुरुकुल में रहते थे।

लेकिन गुरुकुल में दस वर्ष बीत जानेपर भी उनकीं बौधिक क्षमता में खास फर्क नहीं पड़ा, तब अन्तमें एक दिन गुरुजीने निराश होकर कहा बेटा वरदराज! मैंने पूरा प्रयत्न कर लिया, परंतु लगता हैं जैसे तुम्हारे भाग्यमें विद्या नहीं हैं। इसलिए तुम पढ़ाई छोड़कर घर जाओ और कोई अन्य कार्य करो। उस समय किसी ब्राह्माण के बालक में विद्या का अभाव होना असाधारण बाता थी।

अपने गुरुकी बातसे वरदराज को अत्यंत दुःख हुआ कि अब उनका आगेका जीवन विद्याहीन होने से किस प्रकार कटेगा। इस प्रकार चिंतित अवस्था में वे अपने घर की और चलपड़े, चलते-चलते अधिक समय हो गया था उन्हें बड़ी प्यास लगी। पानी पीने के लिए वे एक कुएँके पास गये। कुएँ से पानी निकालते समय एका-एक उनकी नजर कुएंके ऊपरके पत्थर पर पड़ी, उस पत्थर पर जल खींचनेकी रस्सीकी रगड़के गहरे निशान बन गये हैं। वरदराजने सोचा जब इतने कठोर पत्थर पर एक कोमल रस्सीके बार-बार रगड़ने से गहरे निशान बन जाता है, तो अधिक परिश्रम (बारबार प्रयास) करने से मुझे विद्या क्यों नहीं आयेगी?

वे घर वापस जाने का विचार छोड़कर अपने गुरु के गुरुकुल में वापस लौट आये। उन्हों ने अपने गुरु से प्रार्थना की मुझे कुछ दिन और अपने पास रखकर शिक्षा दे, में अधिक परिश्रम करुंगा और विद्या प्राप्त करुंगा।

गुरुजी वरदराज की बात मानगये। अब वरदराजने अब मन लगा कर पढ़ना प्रारम्भ कर दिया था और उसकी लगन इतनी तीव्र होगई थी कि उन्हें किसी अन्य वस्तु व अपने शरीर तक का ध्यान नहीं रहता था। जब सायंकाल वे भोजन करने बैठे, तब भोजन करते समय भी उनकी दृष्टि व्याकरणके पन्नेपर ही रहती थी और वे उसीको स्मरण करनेका प्रयत्न करते रहते थे।

एक बार उनका हाथ थालीके बदले पास पड़ी राख पर गया और वे राखको भोजन समझकर वे उठाउठाकर खाने लग गये। पढ़ने में उनका ध्यान इतना एकाग्राथा की वे भोजन के बदले राख को ही भोजन समझ कर खाये जारहें हैं उसका कुछ उन्हें पता ही नहीं लगा।

यदि किसी कामको पूरी एकाग्रता से तथा सच्चे हृदय से किया जाये, तब देवता भी उसके उपर अवश्य प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिए कुछ ही दिनों के अभ्यास से वरदराज कि शिक्षामें इतनी एकाग्रता देखकर विद्याकी अधिष्ठात्री देवीसरस्वती उसपर प्रसन्न हो गयीं।

देवीसरस्वती ने प्रकट होकर दर्शन दिया। उनके आशीर्वाद से वरदराज व्याकरण तथा अन्य शास्त्रोंके महान विद्वान हो गये। पाणिनीय व्याकरण के संक्षिप्त सारांश को सरल बनाने वाले लघुसिद्धान्तकौमुदी की रचना की।

वरदराजकी इस घटनासे आगे चलकर संस्कृतमें एक प्रचलित कहावत हो गयी, करत-करत अभ्यासके जड़मति होत सुजान। रसरी आवत जात ते सिलपर परत निसान। इसीलिए जीवन में किसी भी क्षेत्र में सफलता चाहनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को यह कहावत अवश्य यादनी चाहिए।

# सरस्वती यंत्र (यन्त्र)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

# श्रीसरस्वती स्तुति

या कुन्देन्दु- तुषारहार- धवला या शुभ्र- वस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमन्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत- शंकर- प्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥ १॥
दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिमयीमक्षमालां दधाना
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण ।
भासा कुन्देन्दु- शंखस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ॥ २॥
आशासु राशी भवदंगवल्लि
भासैव दासीकृत- दुग्धसिन्धुम् ।
मन्दस्मितैर्निन्दित- शारदेन्दुं
वन्देऽरविन्दासन- सुन्दरि त्वाम् ॥ ३॥
शारदा शारदाम्बोजवदना वदनाम्बुजे ।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥ ४॥
सरस्वतीं च तां नौमि वागधिष्ठातृ- देवताम् ।
देवत्वं प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः ॥ ५॥
पातु नो निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती ।
प्राज्ञेतरपरिच्छेदं वचसैव करोति या ॥ ६॥
शुद्धां ब्रह्मविचारसारपरमा- माद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्पाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ ७॥
वीणाधरे विपुलमंगलदानशीले
भक्तार्तिनाशिनि विरिंचिहरीशवन्द्ये ।
कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ॥ ८॥
श्वेताब्जपूर्ण- विमलासन- संस्थिते हे
श्वेताम्बरावृतमनोहरमंजुगात्रे ।
उद्यन्मनोज्ञ- सितपंकजमंजुलास्ये
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ॥ ९॥
मातस्त्वदीय- पदपंकज- भक्तियुक्ता
ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय ।
ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण
भूवह्नि- वायु- गगनाम्बु- विनिर्मितेन ॥ १०॥
मोहान्धकार- भरिते हृदये मदीये
मातः सदैव कुरु वासमुदारभावे ।
स्वीयाखिलावयव- निर्मलसुप्रभाभिः
शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम् ॥ ११॥
ब्रह्मा जगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः
शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः ।
न स्यात्कृपा यदि तव प्रकटप्रभावे
न स्युः कथंचिदपि ते निजकार्यदक्षाः ॥ १२॥
लक्ष्मिर्मेधा धरा पुष्टिर्गौरी तृष्टिः प्रभा धृतिः ।
एताभिः पाहि तनुभिरष्टभिर्मां सरस्वती ॥ १३॥
सरसवत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः
वेद- वेदान्त- वेदांग- विद्यास्थानेभ्य एव च ॥ १४॥
सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने ।
विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोस्तु ते ॥ १५॥
यदक्षर- पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ १६॥

**॥ इति श्रीसरस्वती स्तोत्रं संपूर्णं॥**

# सरस्वती स्तोत्र

शुक्लां ब्रह्म-विचार-सार-परमां आद्यां जगद्-व्यापिनीम्।
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ॥
हस्ते स्फाटिक-मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि-प्रदां शारदाम् ॥१॥
या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्र-वस्त्रावृता,
या वीणा वर-दण्ड-मण्डित-करा या श्वेत-पद्मासना।
या ब्रह्माऽच्युत-शंकर-प्रभृतिभिर्देवैः सदा सेविता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष-जाड्यापहा ॥२॥
ह्रीं ह्रीं ह्रीं हृद्यैक-बीजे शशि-रुचि-कमले कल-विसृष्ट-शोभे,
भव्ये भव्यानुकूले कुमति-वन-दवे विश्व-वन्द्यांघ्रि-पद्मे।
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणत-जनो मोद सम्पादयित्री,
प्रोत्फुल्ल-ज्ञान-कूटे हरि-निज-दयिते देवि!
संसार तारे ॥३॥
ऐं ऐं दृष्ट-मन्त्रे कमल-भव-मुखाम्भोज-भूत-स्वरुपे,
रुपारुप-प्रकाशे सकल-गुण-मये निर्गुणे निर्विकारे।
न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदित-विभवे नापि विज्ञान-तत्त्वे,
विश्वे विश्वान्तराले सुर-वर-नमिते निष्कले नित्य-शुद्धे
॥४॥ उक्त स्त्रोत का पाठ करने से भगवती सरस्वती का कण्ठ में वास होता है।

---

# सरस्वती स्तोत्र

ॐ रवि-रुद्र-पितामह-विष्णु-नुतं, हरि-चन्दन-कुंकुम-पंक-युतम्!
मुनि-वृन्द-गजेन्द्र-समान-युतं,तव नौमि सरस्वति! पाद-युगम् ॥१॥
शशि-शुद्ध-सुधा-हिम-धाम-युतं, शरदम्बर-बिम्ब-समान-करम्।
बहु-रत्न-मनोहर-कान्ति-युतं,तव नौमि सरस्वति! पाद-युगम् ॥२॥
कनकाब्ज-विभूषित-भीति-युतं, भव-भाव-विभावित-भिन्न-पदम्।
प्रभु-चित्त-समाहित-साधु-पदं,तव नौमि सरस्वति! पाद-युगम् ॥३॥
मति-हीन-जनाश्रय-पारमिदं, सकलागम-भाषित-भिन्न-पदम्।
परि-पूरित-विशवमनेक-भवं, तव नौमि सरस्वति! पाद-युगम् ॥४॥
सुर-मौलि-मणि-द्युति-शुभ्र-करं, विषयादि-महा-भय-वर्ण-हरम्।
निज-कान्ति-विलायित-चन्द्र-शिवं, तव नौमि सरस्वति! पाद-युगम् ॥५॥
भव-सागर-मज्जन-भीति-नुतं, प्रति-पादित-सन्तति-कारमिदम्।
विमलादिक-शुद्ध-विशुद्ध-पदं,तव नौमि सरस्वति! पाद-युगम् ॥६॥
परिपूर्ण-मनोरथ-धाम-निधिं, परमार्थ-विचार-विवेक-विधिम्।
सुर-योषित-सेवित-पाद-तमं,तव नौमि सरस्वति! पाद-युगम् ॥७॥
गुणनैक-कुल-स्थिति-भीति-पदं, गुण-गौरव-गर्वित-सत्य-पदम्।
कमलोदर-कोमल-पाद-तलं,तव नौमि सरस्वति! पाद-युगम् ॥८॥

**॥फल-श्रुति ॥**

इदं स्तोत्रं महा-पुण्यं, ब्रह्मणा परिकीर्तितं।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, तस्य कण्ठे सरस्वती ॥
त्रिसंध्यं यो जपेन्नित्यं, जले वापि स्थले स्थितः। पाठ-मात्रे भवेत् प्राज्ञो, ब्रह्म-निष्ठो पुनः पुनः ॥
हृदय-कमल-मध्ये, दीप-वद् वेद-सारे।
प्रणव-मयमतर्क्यं, योगिभिः ध्यान-गम्यकम् ॥
हरि-गुरु-शिव-योगं, सर्व-भूतस्थमेकम्।
सकृदपि मनसा वै, ध्यायेद् यः सः भवेन्मुक्त ॥

**नियमीत उपरोक्त स्तोत्र का पाठ करने से देवी सरस्वती की पूर्ण कृपा मिलती हैं एवं मोक्ष कि प्राप्ति होती हैं।**

# जब लक्ष्मी, सरस्वती और गंगा को मिला शाप

संकलन गुरुत्व कार्यालय

लक्ष्मी, सरस्वती और गंगा तीनो नारायण के निकट निवास करती थीं। एक बार गंगा ने नारायण के प्रति अनेक कटाक्ष किये। नारायण तो बाहर चले गये किन्तु इस बात से सरस्वती रुष्ट हो गयी। सरस्वती को लगता था कि नारायण गंगा और लक्ष्मी से अधिक प्रेम करते हैं। लक्ष्मी ने दोनों का बीच-बचाव करने का प्रयत्न किया। सरस्वती ने लक्ष्मी को निर्विकार जड़वत् मौन देखा तो जड़ वृक्ष अथवा सरिता होने का शाप दिया। सरस्वती को गंगा की निर्लज्जता तथा लक्ष्मी के मौन रहने पर क्रोध था। उसने गंगा को पापी जगत का पाप समेटने वाली महानदी बनने का शाप दिया। गंगा ने भी सरस्वती को मृत्युलोक में नदी बनकर जनसमुदाय का पाप प्राक्षालन करने का शाप दिया। तभी नारायण भी वापस आ पहुँचे। उन्होंने सरस्वती को शांत किया तथा कहा एक पुरुष अनेक नारियों के साथ निर्वाह नहीं कर सकता। परस्पर शाप के कारण तीनों को अंश रूप में वृक्ष अथवा सरिता बनकर मृत्युलोक में प्रकट होना पड़ेगा। लक्ष्मी !तुम एक अंश से पृथ्वी पर धर्म-ध्वज राजा के घर अयोनिसंभवा कन्या का रूप धारण करोगी, भाग्य-दोष से तुम्हें वृक्ष तत्व की प्राप्ति होगी। मेरे अंश से जन्मे असुरेंद्र शंखचूड़ से तुम्हारा पाणिग्रहण होगा। भारत में तुम तुलसी नामक पौधे तथा पदमावती नामक नदी के रूप में अवतरित होगी। किन्तु पुन :यहाँ आकर मेरी ही पत्नी रहोगी। गंगा, तुम सरस्वती के शाप से मनुष्यो के पाप नाश करने वाली नदी का रूप धारण करके अंश रूप से अवतरित होगी। तुम्हारे अवतरण के मूल में भागीरथ की तपस्या होगी, अत :तुम भागीरथी कहलाओगी। मेरे अंश से उत्पन्न राजा शांतनु तुम्हारे पति होंगे। अब तुम पूर्ण रूप से शिव के समीप जाओ। तुम उन्हीं की पत्नी होगी। सरस्वती, तुम भी पापनाशिनी सरिता के रूप में पृथ्वी पर अवतरित होगी। तुम्हारा पूर्ण रूप ब्रह्मा की पत्नी के रूप में रहेगा। तुम उन्हीं के पास जाओ। उन तीनों ने अपने कृत्य पर क्षोभ प्रकट करते हुए शाप की अवधि जाननी चाही। कृष्ण ने कहा कलि के दस हज़ार वर्ष बीतने के उपरान्त ही तुम सब शाप-मुक्त हो सकोगी। सरस्वती ब्रह्मा की प्रिया होने के कारण ब्राह्मी नाम से विख्यात हुई।

## ॥सरस्वती आरती॥

आरती कीजै सरस्वती की,
जननि विद्या बुद्धि भक्ति की। आरती ..
जाकी कृपा कुमति मिट जाए।
सुमिरण करत सुमति गति आये,
शुक सनकादिक जासु गुण गाये।
वाणि रूप अनादि शक्ति की॥ आरती..
नाम जपत भ्रम छूट दिये के।
दिव्य दृष्टि शिशु उध हिय के।
मिलहिं दर्श पावन सिय पिय के।
उड़ाई सुरभि युग-युग, कीर्ति की। आरती
रचित जास बल वेद पुराणा।
जेते ग्रन्थ रचित जगनाना।
तालु छन्द स्वर मिश्रित गाना।
जो आधार कवि यति सती की॥ आरती
सरस्वती की वीणा-वाणी कला जननि की॥

## द्वादश सरस्वती स्तोत्र

देवी सरस्वती की सुविख्यात द्वादश नामावली निम्नलिखित है।

प्रथमं भारती नाम द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदा देवी चतुर्थं हंसवाहिनी ॥
पञ्चमं जगती ख्याता षष्ठं वागीश्वरी तथा।
सप्तमं कुमुदी प्रोक्ता अष्टमं ब्रह्मचारिणी ॥
नवमं बुद्धिदात्री च दशमं वरदायिनी।
एकादशं चन्द्रकान्तिर्द्वादशं भुवनेश्वरी ॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
जिह्वाग्रे वसते नित्यं ब्रह्मरुपा सरस्वती ॥

# सरस्वतीस्तोत्रम्

**विनियोग:** ॐ अस्य श्री सरस्वतीस्तोत्रमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री सरस्वती देवता। धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे **विनियोगः।**

आरूढ़ा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रं वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयं पुस्तकं ज्ञानगम्या । सा वीणां वादयंती स्वकरकरजपैः शास्त्रविज्ञानशब्दैः। क्रीडंती दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना ॥१॥

श्वेतपद्मासना देवी श्वेतगन्धानुलेपना । अर्चिता मुनिभिः सर्वैर्ऋषिभिः स्तूयते सदा । एवं ध्यात्वा सदा देवीं वांछितं लभते नरः ॥२॥

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं। वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्। हस्ते स्फटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्। वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥३॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभवस्त्रावृता। या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना। या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवै सदा वन्दिता। सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥॥४॥

ह्रीं ह्रीं हृद्यैकबीजे शशिरुचिकमले कल्पविस्पष्टशोभे भव्ये भव्यानुकूले कुमतिवनदवे विश्ववन्द्यांघ्रिपद्मे । पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणजनमनोमोदसंपादयित्रि प्रोत्फुल्ल ज्ञानकूटे हरिनिजदयिते देवि संसारसारे ॥५॥

ऐं ऐं ऐं दृष्टमन्त्रे कमलभवमुखांभोजभूते स्वरूपे रूपारूपप्रकाशे सकल गुणमये निर्गुणे निर्विकारे । न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदितविभवे नापि विज्ञानतत्वे विश्वे विश्वान्तरात्मे सुरवरनमिते निष्कले नित्यशुद्धे ॥६॥

ह्रीं ह्रीं ह्रीं जाप्यतुष्टे हिमरुचिमुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम् । विद्ये वेदान्तवेद्ये परिणतपठिते मोक्षदे परिणतपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे मार्गतीतस्वरूपे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे ॥७॥

धीं धीं धीं धारणाख्ये धृतिमतिनतिभिर्नामभिः कीर्तनीये नित्येऽनित्ये निमित्ते मुनिगणनमिते नूतने वै पुराणे । पुण्ये पुण्यप्रवाहे हरिहरनमिते नित्यशुद्धे सुवर्णे मातर्मात्रार्धतत्वे मतिमतिमतिदे माधवप्रीतिमोदे ॥८॥

ह्रूं ह्रूं ह्रूं स्वस्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते सन्तुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जृम्भिणि स्तम्भविद्ये । मोहे मुग्धप्रवाहे कुरु मम विमतिध्वान्तविध्वंसमीडे गीर्गौर्वाग्भारति त्वं कविवररसनासिद्धिदे सिद्धिसाध्ये ॥९॥

स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम खलु रसनां नो कदाचित्यजेथा मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे यातु पापम् । मा मे दुःखं कदाचित्क्कचिदपि विषयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वं शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुण्ठा कदापि ॥१०॥

इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनम्रो वाणी वाचस्पतेरप्यविदितविभवो वाक्पटुर्मृष्ठकण्ठः । स स्यादिष्टार्थलाभैः सुतमिव सततं पाति तं सा च देवी सौभाग्यं तस्य लोके प्रभवति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति ॥११॥

निर्विघ्नं तस्य विद्या प्रभवति सततं चाश्रुतग्रंथबोधः कीर्तिस्त्रैलोक्यमध्ये निवसति वदने शारदा तस्य साक्षात् । दीर्घायुर्लोकपूज्यः सकलगुणानिधिः सन्ततं राजमान्यो वाग्देव्याः संप्रसादात्त्रिजगति विजयी जायते सत्सभासु ॥१२॥

ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः । सारस्वतो जनः पाठात्सकृदिष्टार्थलाभवान् ॥१३॥

पक्षद्वये त्रयोदश्यामेकविंशतिसंख्यया । अविच्छिन्नः पठेद्धीमान्ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥१४॥

सर्वपापविनिर्मुक्तः सुभगो लोकविश्रुतः । वांछितं फलमाप्नोति लोकेऽस्मिन्नात्र संशयः ॥१५॥

ब्रह्मणेति स्वयं प्रोक्तं सरस्वत्यां स्तवं शुभम् । प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१६॥

॥ इति श्रीमद्ब्रह्मणविरचितं सरस्वतीस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

# ॥अथ श्री सरस्वती चालीसा॥

**॥दोहा॥**

जनक जननि पदम दुरज, निज मस्तक पर धारि। बन्दौं मातु सरस्वती, बुद्धि बल दे दातारि ॥
पूर्ण जगत में व्याप्त तव, महिमा अमित अनंतु। रामसागर के पाप को, मातु तुही अब हन्तु ॥

**॥चौपाई॥**

जय श्रीसकल बुद्धि बलरासी। जय सर्वज्ञ अमर अविनाशी ॥
जय जय जय वीणाकार धारी। करती सदा सुहंस सवारी ॥
रुप चतुर्भुजधारी माता। सकल विश्व अन्दर विख्याता ॥
जग में पाप बुद्धि जब होती। तबही धर्म की फीकी ज्योति ॥
तबहि मातु का निज अवतारा। पाप हीन करती महि तारा ॥
बाल्मीकि जी थे हत्यारा। तब प्रसाद जानै संसारा ॥
रामचरित जो रचे बनाई। आदि कवि पदवी को पाई ॥
कालिदास जो भये विख्याता। तेरी कृपा दृष्टि से माता ॥
तुलसी सूर आदि विद्वाना। भये और जो ज्ञानी नाना ॥
तिन्ह न और रहेउ अवलम्बा। केवल कृपा आपकी अम्बा ॥
करहु कृपा सोई मातु भवानी। दुखित दीन निज दासहि जानी ॥
पुत्र करई अपराध बहूता। तेहि न धरइ चित सुन्दर माता ॥
राखु लाज जननि अब मेरी। विनय करु भाँति बहुतेरी ॥
मैं अनाथ तेरी अवलंबा। कृपा करउ जय जय जगदंबा ॥
मधु कैटभ जो अति बलवाना। बाहुयुद्ध विष्णु से ठाना ॥
समर हजार पांच में घोरा। फिर भी मुख उनसे नहीं मोरा ॥
मातु सहाय कीन्ह तेहि काला। बुद्धि विपरीत भई खलहाला ॥
तेहि ते मृत्यु भई खल केरी। पुरवहु मातु मनोरथ मेरी ॥
चंड मुण्ड जो थे विख्याता। छण महु संहारेउ तेहि माता ॥
रक्तबीज से समरथ पापी। सुरमुनि हृदय धरा सब काँपी ॥
काटेउ सिर जिम कदली खम्बा। बार बार बिनऊं जगदंबा ॥
जगप्रसिद्ध जो शुंभनिशुंभा। छण में वधे ताहि तू अम्बा ॥
भरत मातु बुद्धि फेरेऊ जाई। रामचन्द्र बनवास कराई ॥
एहिविधि रावन वध तू कीन्हा। सुर नर मुनि सबको सुख दीन्हा ॥
को समरथ तव यश गुन गाना। निगम अनादि अनंत बखाना ॥
विष्णु रुद्र अज सकहिन मारी। जिनकी हो तुम रक्षाकारी ॥
रक्त दन्तिका और शताक्षी। नाम अपार है दानव भक्षी ॥
दुर्गम काज धरा पर कीन्हा। दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा ॥
दुर्ग आदि हरनी तू माता। कृपा करहु जब जब सुखदाता ॥
नृप कोपित को मारन चाहै। कानन में घेरे मृग नाहै ॥
सागर मध्य पोत के भंजे। अति तूफान नहिं कोऊ संगे ॥
भूत प्रेत बाधा या दु:ख में। हो दरिद्र अथवा संकट में ॥
नाम जपे मंगल सब होई। संशय इसमें करइ न कोई ॥
पुत्रहीन जो आतुर भाई। सबै छाँडि पूजें एहि माई ॥
करै पाठ नित यह चालीसा। होय पुत्र सुन्दर गुण ईशा ॥
धूपादिक नवैद्य चढ़ावै। संकट रहित अवश्य हो जावै ॥
भक्ति मातु की करैं हमेशा। निकट न आवै ताहि कलेशा ॥
बंदी पाठ करें सत बारा। बंदी पाश दूर हो सारा ॥
रामसागर बाधि हेतु भवानी। कीजै कृपा दास निज जानी ॥

**॥दोहा॥**

मातु सूर्य कान्ति तव, अन्धकार मम रूप। डूबन से रक्षा करहु, परूँ न मैं भव कूप॥
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, सुनहु सरस्वती मातु। रामसागर अधम को आश्रम तू ही ददातु॥

# सरस्वती के विभिन्न मंत्र से विद्या प्राप्ति

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

ज्यादातर विद्यार्थियों कि स्मरण शक्ति कमजोर होती हैं। बच्चे को एवं उसके माता-पिता को एसा लगता हैं, कि बच्चे का मन पढाई में नहीं लगता, या बच्चे जितनी मेहनत करते हैं उन्हें उसके अनुरुप फल नहीं मिलता, परीक्षा के प्रश्न पत्र में लिखते समय उसे भय रहता हैं, बच्चे ने जो पढाई कि हैं वह परिक्षा पत्र में लिखते समय भूल जाता हैं, इत्यादी.., कारणो से बच्चे और माता-पिता हमेशा परेशान रहते हैं।

कुछ बच्चे होते हैं, जो एक या दो बार पढने पर याद कर लेते हैं, तो कुछ बच्चे वही पाठ्य सामग्री अधिक समय पढने के उपरांत भी कुछ याद नहीं रहता।

एसा क्यूं होता हैं? इस का मुख्य कारण हैं, अनुचित ढंग से कि गई पढाई या पढाई में एकाग्रता की कमी। विद्या अध्ययन में आने वाली रुकावटो एवं विघ्न बाधाओं को दूर करने हेतु शास्त्रो में कुछ विशिष्ठ मंत्रो का उल्लेख मिलता हैं। जिसके जप से पढाई में आने वाली रुकावटे दूर होती हैं एवं कमजोर याद शक्ति इत्यादी में लाभ प्राप्त होता हैं।

## सरस्वती मंत्र:

*या कुंदेंदु तुषार हार धवला या शुभ्र वृस्तावता ।*
*या वीणा वर दण्ड मंडित करा या श्वेत पद्मसना ।।*
*या ब्रह्माच्युत शंकर: प्रभृतिर्भि देवै सदा वन्दिता ।*
*सा माम पातु सरस्वती भगवती नि:शेष जाड्या पहा ॥१॥*

**भावार्थ:** जो विद्या की देवी भगवती सरस्वती कुन्द के फूल, चंद्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह श्वेत वर्ण की हैं और जो श्वेत वस्त्र धारण करती हैं, जिनके हाथ में वीणा-दण्ड शोभायमान है, जिन्होंने श्वेत कमलों पर अपना आसन ग्रहण किया है तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर आदि देवताओं द्वारा जो सदा पूजित हैं, वही संपूर्ण जड़ता और अज्ञान को दूर कर देने वाली माँ सरस्वती आप हमारी रक्षा करें।

## सरस्वती मंत्र तन्त्रोक्तं देवी सूक्त से:

*या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेणसंस्थिता।*
*नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥*

# मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

**वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र:** यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

# जब सरस्वती ने कालिदास का अहंकार तोडा ?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

महाकवि कालिदास अपने जमाने के महान विद्वान थे। मना जाता हैं उनके कंठ में साक्षात सरस्वती का वास था। प्रखर विद्वान थे इस लिए शास्त्रार्थ में उन्हें कोई पराजित नहीं कर सकता था। अपने यश, प्रतिष्ठा और सम्मान पाकर एकबार कालिदास को अपनी विद्वता का घमंड हो गया। उन्हें लगने लगा कि उन्होंने संसार के समस्त प्रकार के ज्ञान प्राप्त कर लिए हैं और अब उनके लिए सीखने को कुछ बाकी नहीं बचा। उन्हें एसा लगने लगा की उनसे बड़ा ज्ञानी संसार में कोई दूसरा नहीं। एक बार पड़ोसी राज्य से शास्त्रार्थ का निमंत्रण पाकर कालिदास महाराजा विक्रमादित्य से अनुमति लेकर घोड़े पर रवाना हुए। उन दिनो गर्मी का मौसम था, धूप काफी तेज़ थी और लगातार यात्रा से कालिदास को रास्ते में प्यास लग आई। जंगल था और दूर तक पानी दिखाई नहीं दे रहा था। जंगल में थोडी तलाश करने पर उन्हें एक टूटी-फूटी झोपड़ी दिखाई दी। पानी मिलने की आशा नज़र आई तो वो उस झोपड़ी की ओर बढ चले। झोपड़ी के सामने कुआं था। कालिदास जी ने सोचा कि यदि कोई झोपड़ी में हो तो उससे पानी देने का अनुरोध किया जाए।

कालिदास सोचही रहे थे की उसी समय झोपड़ी से एक छोटी बच्ची हाथ में मटका लेकर निकली। बच्ची ने मटके में कुएं से पानी भरा और जाने लगी। कालिदास बच्ची के पास जाकर बोले बालिके! बहुत प्यास लगी है ज़रा पानी पिला दो। बच्ची ने कहा आप कौन हैं? मैं आपको नहीं जानती पहले अपना परिचय दीजिए।

कालिदास को लगा की मुझे कौन नहीं जानता मुझे परिचय देने की क्या आवश्यकता? फिर भी प्यास से बेहाल थे तो बोले, बालिके अभी तुम छोटी हो। इसलिए मुझे नहीं जानती। घर में कोई बड़ा हो तो उसको भेजो। वो मुझे देखते ही पहचान लेगा। दूर-दूर तक मेरा बहुत नाम और सम्मान है । मैं बहुत बलवान व्यक्ति हूं।

कालिदास के बड़बोलेपन और अहंकार भरे वचनों से अप्रभावित बालिका बोली, आप असत्य कह रहे हैं। संसार में सिर्फ दो ही बलवान हैं और उन दोनों को मैं अच्छी तरह जानती हूँ। यदि आप अपनी प्यास बुझाना चाहते हैं तो उन दोनों का नाम बाताएं? थोडी देर सोचकर कालिदास बोले, मुझे नहीं पता, तुम ही बता दो। मगर मुझे पानी पिला दो। मेरा गला सूख रहा हैं। बालिका बोली, दो बलवान हैं अन्न और जल। भूख और प्यास में इतनी शक्ति हैं कि बड़े से बड़े बलवान को भी झुका दें। देखिए तेज़ प्यास ने आपकी क्या हालत बना दी हैं।

कलिदास चकित रह गए। लड़की का तर्क अकाट्य था। बड़े से बड़े विद्वानों को पराजित कर चुके कालिदास एक बच्ची के सामने निरुत्तर खडे थे। बालिका ने पुनः पूछा सत्य बताएं कौन हैं आप? वो चलने की तैयारी में थी, कालिदास थोड़ा नम्र होकर बोले, बालिके! मैं बटोही हूं। मुस्कुराते हुए बच्ची बोली, आप अभी भी

झूठ बोल रहे हैं। संसार में दो ही बटोही हैं। उन दोनों को मैं अच्छी तरह जानती हूँ, बताइए वो दोनों कौन हैं?”

तेज़ प्यास ने पहले ही कालिदास जी की बुद्धि क्षीण कर दी थी। लेकिन लाचार होकर उन्होंने फिर अनभिज्ञता व्यक्त कर दी। बच्ची बोली, आप स्वयं को बड़ा विद्वान बता रहे हैं और ये भी नहीं जानते? एक स्थान से दूसरे स्थान तक बिना थके जाने वाला बटोही कहलाता है। बटोही दो ही हैं, एक चंद्रमा और दूसरा सूर्य जो बिना थके चलते रहते हैं। आप तो थक गए हैं। भूख प्यास से बेदम हो रहे हैं। आप कैसे बटोही हो सकते हैं? इतना कहकर बालिका ने पानी से भरा मटका उठाया और झोपड़ी के भीतर चली गई।

अब तो कालिदास और भी दुखी हो गए। इतने अपमानित वे जीवन में कभी नहीं हुए। प्यास से शरीर की शक्ति घट रही थी। दिमाग़ चकरा रहा था। उन्होंने आशा से झोपड़ी की तरफ़ देखा। तभी अंदर से एक वृद्ध स्त्री निकली। उसके हाथ में खाली मटका था। वो कुएं से मटके में पानी भरने लगी। अब तक काफी विनम्र हो चुके कालिदास बोले, माते प्यास से मेरा बुरा हाल है। भर पेट पानी पिला दीजिए बड़ा पुण्य होगा।

बूढ़ी माँ बोलीं, बेटा मैं तुम्हे जानती नहीं। अपना परिचय दो। मैं अवश्य पानी पिला दूँगी। कालिदास ने कहा, मैं मेहमान हूँ, कृपया पानी पिला दें। तुम मेहमान कैसे हो सकते हो? संसार में दो ही मेहमान हैं। पहला धन और दूसरा यौवन। इन्हें जाने में समय नहीं लगता, सत्य बताओ कौन हो तुम?

अब तक के सारे तर्क से पराजित हताश कालिदास बोले मैं सहनशील हूं। पानी पिला दें।नहीं, सहनशील तो दो ही हैं। पहली, धरती जो पापी-पुण्यात्मा सबका बोझ सहती है, उसकी छाती चीरकर बीज बो देने से भी अनाज के भंडार देती है। दूसरे, पेड़ जिनको पत्थर मारो फिर भी मीठे फल देते हैं। तुम सहनशील नहीं। सच बाताओ कौन हो? कालिदास लगभग मूर्छा की स्थिति में आ गए और तर्क-वितर्क से झल्लाकर बोले, मैं हठी हूं। फिर असत्य। हठी तो दो ही हैं, पहला नख और दूसरा केश। कितना भी काटो बार-बार निकल आते हैं। सत्य कहें ब्राह्मण कौन हैं आप? पूरी तरह अपमानित और पराजित हो चुके कालिदास ने कहा, फिर तो मैं मूर्ख ही हूं।

नहीं तुम मूर्ख कैसे हो सकते हो। मूर्ख दो ही हैं। पहला राजा जो बिना योग्यता के भी सब पर शासन करता है, और दूसरा दरबारी पंडित जो राजा को प्रसन्न करने के लिए ग़लत बात पर भी तर्क करके उसको सही सिद्ध करने की चेष्टा करता है। कुछ बोल न सकने की स्थिति में कालिदास वृद्धा के पैर पर गिर पड़े और पानी की याचना में गिड़गिड़ाने लगे।

उठो वत्स, ये आवाज़ सुनकर जब कालिदास ने ऊपर देखा तो साक्षात माता सरस्वती वहां खड़ी थी। कालिदास पुनः नतमस्तक हो गए। देवी सरस्वती जी बोली शिक्षा से ज्ञान आता है न कि अहंकार। तूने शिक्षा के बल पर प्राप्त मान और प्रतिष्ठा को ही अपनी उपलब्धि मान लिया और अहंकार कर बैठे। इसलिए मुझे तुम्हारे चक्षु खोलने के लिए ये स्वांग करना पड़ा। कालिदास को अपनी गलती समझ में आ गई और भरपेट पानी पीकर वे आगे चल पड़े।

# सरस्वती पूजन से बच्चे बनते हैं महाबुद्धिमान?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

# उत्तम विद्या प्राप्ति के लिए रुद्राक्ष का चयन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

## एक मुखी:

**एक मुखी रुद्राक्ष साक्षात ब्रह्म स्वरुप हैं।**

- एक मुखी रुद्राक्ष काजू के समान अर्थात अर्धचंद्राकार स्वरुप में प्राप्त होते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष गोल आकार में सरलता से प्राप्त नहीं होता हैं। क्योकि गोलाकार में मिलना दुर्लभ मानागया हैं। बडे सौभाग्य किसी मनुष्य को गोल एक मुखी रुद्राक्ष के दर्शन एवं प्राप्त से होता हैं।
- इसलिए एकमुखी रुद्राक्ष भोग व मोक्ष प्रदान करने वाला हैं।
- जो मनुष्य ने एकमुखी रुद्राक्ष धारण किया हो उस पर मां लक्ष्मी हमेशा कृपा वर्षाती हैं। या जिस घर में एकमुखी रुद्राक्ष का पूजन होता हों वहां लक्ष्मी का स्थाई वास होता हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने वाले मनुष्य के घर में धन-धान्य, सुख-समृद्धि-वैभव, मान-सम्मान प्रतिष्ठा में वृद्धि करने वाला हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने वाले मनुष्य की सभी प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
- जिस स्थान पर एकमुखी रुद्राक्ष होता हैं वहां से समस्त प्रकार के उपद्रवो का नाश होता हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से अंतःकरण में दिव्य-ज्ञान का संचार होता हैं।
- भगवान शिव का वचन हैं की एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से ब्रह्महत्या व पापों का नाश करने वाला हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष सर्व प्रकार कि अभीष्ट सिद्धियों को प्रदान करने वाला हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से धारण कर्ता में सात्विक उर्जामें वृद्धि करने में सहायक, मोक्ष प्रदान करने समर्थ हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करने वाला होता हैं।

**एक मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-**

*ॐ एं हं औं ऐ ॐ॥*

## तीन मुखी रुद्राक्ष:

- तीन मुखी रुद्राक्ष थोडा लंबे आकार में व गोलाकार स्वरुप दोनो स्वरुपों में प्राप्त होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष साक्षात अग्नि का स्वरुप हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से गंभिर बीमारियों से रक्षा होती हैं।
- यदि कोई लम्बे समय से रोगग्रस्त हैं तो उसके तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से रोगसे शीघ्र मुक्ति मिलती हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना पीलिया के रोगी के लिए अत्याधिक लाभकारी होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से स्फूर्ति, कार्यक्षमता में वृद्धि होती हैं।
- जानकारों के मतानुशार तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से स्त्री हत्या इत्यादि पापों का नाश होता हैं। कुछ विद्वानो का मत हैं की तीन मुखी रुद्राक्ष ब्रह्म हत्या के पाप को नाश करने में भी समर्थ हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शीत ज्वर दूर होता हैं।

- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अद्भुत विद्या की प्राप्ति होती हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना मंदबुद्धि बच्चों के बौधिक विकास के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध होता हैं।
- निम्न रक्तचाप को दूर करने में भी तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अग्निदेव की कृपा प्राप्त होती हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष से अग्नि भय से रक्षण होता हैं।

**तीनमुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-**

*ॐ रं हूं ह्रीं हूं ओं॥*

## चार मुखी रुद्राक्ष:

- चार मुखी रुद्राक्ष साक्षात ब्रह्मा का स्वरुप हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से बौधिक शक्ति का विकास होता हैं।
- विद्याध्ययन करने वाले बच्चो के बौधिक विकास एवं स्मरण शक्ति के विकास के लिए चार मुखी रुद्राक्ष उत्तम फलदायि सिद्ध होता हैं।
- चारमुखी रुद्राक्ष धारण करनेसे वाणी में मिठास आती हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मानसिक विकार दूर होते हैं।
- विद्वानो का कथन है की चार मुखी रुद्राक्ष के दर्शन एवं स्पर्श से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थो की शीघ्र प्राप्ति होती हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से जीव हत्या के पापों का नाश होता हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष को अभीष्ट सिद्धियों को प्राप्त करने में सहायक व कल्याणकारी हैं।

**चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-**

*ॐ व्रां क्रां तां हां ईं॥*

## छः मुखी रुद्राक्ष:

- छः मुखी रुद्राक्ष साक्षात कार्तिकेय का स्वरुप हैं। कुछ विद्वानो के मत से छः मुखी रुद्राक्ष गणेशजी का प्रतिक हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से माता पार्वती शीघ्र प्रसन्न होती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से विद्या प्राप्ति में सफलता प्राप्त होती हैं। अतः छः मुखी रुद्राक्ष विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहता हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से वाक शक्ति में निपुणता आती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से व्यवसायीक कार्यों में लाभ प्राप्त होता हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष से मनुष्यको भौतिक सुख-संपन्नता प्राप्त होती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने दारिद्र्यता दूर होती हैं।
- जानकारों नें छः मुखी रुद्राक्ष को धारण करना मूर्च्छा जैसी बीमारी में लाभदायक बताया हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करने में सफलता प्राप्त होती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अपार शक्ति प्राप्त होती हैं व मनुष्यकी सकल इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।
- माहापुरुषो का कथन हैं की छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से भ्रूणहत्या आदि पापों का निवारण होता हैं।
- इस लिए इसे शत्रुंजय रुद्राक्ष कहां जाता हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार की अभीष्ट सिद्धियां प्राप्ति में सहायता मिलती हैं।

**छः मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-**

*ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं॥*

# विद्याभ्यास के लिए उत्तम सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच

Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach

वेदों में उल्लेख हैं की देवी गायत्री सभी प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की जननी हैं, देवी गायत्री की उपासना करने से देवी गायत्री का आशिर्वाद प्राप्त कर साधक 84 कलाओं का ज्ञाता हो जाता हैं। माना जाता हैं की सिद्ध की हुई गायत्री कामधेनु के समान हैं। जिस प्रकार गंगा शरीर के पापों को निर्मल करती हैं, उसी प्रकार गायत्री रूपी ब्रह्म गंगा से आत्मा पवित्र होती हैं।

जिस प्रकार देवी गायत्री पापों का नाश करने वाली हैं, समस्त सांसारिक और पारलौकिक सुखों को प्रदान करने वाली हैं। उसी प्रकार सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच को धारण करने से साधक के समस्त रोग-शोक-भय, भूत-प्रेत, तंत्र बाधा, चोट, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्तंभन, कामण-टूमण, इत्यादि उपद्रवों का नाश होता हैं। साधक को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति भी संभंव हैं!

सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच को धारण करने से मूर्ख से मूर्ख और जड़ से जड़ व्यक्ति भी विद्वान होने में समर्थ हो सकता हैं! धारण कर्ता को असाध्य रोग एवं परेशानीयों से मुक्ति मिल सकती हैं!

सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच के प्रभाव से दिन-प्रतिदिन धारण कर्ता की धन-संपत्ति की वृद्धि एवं रक्षा होती हैं। सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच के प्रभाव से ग्रह जनित पीड़ाओं से भी रक्षा होती।

धारण कर्ता को अपने कार्यों में अद्भूत सफलतायें मिल जाती हैं। सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच को धारण करने से धारण कर्ता का चित्त शुद्ध होता हैं और हृदय में निर्मलता आती हैं। शरीर नीरोग रहता हैं, स्वभाव में नम्रता आती हैं, बुद्धि सूक्ष्म होने से साधक की दूरदर्शिता बढ़ती हैं और स्मरण शक्ति का विकास होता हैं। अनुचित काम करने वालों के दुर्गुण गायत्री के कारण सरलता से छूट सकते हैं ।

# मंत्र सिद्ध

# वास्तु कलश

- वास्तु कलश एक दिव्य प्रतीक माना जाता है।
- वास्तु कलश का प्रयोग वास्तु दोष निवारण के लिए किया जाता है, यह सभी प्रकार के वास्तु दोषों को दूर करता है।
- यह विशेष रूप से घर, व्यवसायीक प्रतिष्ठान और उद्योग में वास्तु शांति के लिए प्रयोग किया जाता है।
- यदि आप जिस घर में रहते हैं, वह आपके दुर्भाग्य का कारण बन जाता है, बीमार स्वास्थ्य, निर्धनता या आपको व्यवसाय में नुकसान होता हैं, तो वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में कोई वास्तु दोष होता है।
- इस समस्या से छुटकारा पाने का बहुत ही सरल और प्रभावी तरीका है अपने फ्लैट, घर, अपार्टमेंट, दुकान, कार्यालय और उद्योग में वास्तु कलश को स्थापित करना।
- मंत्र सिद्ध वास्तु कलश का प्रयोग घर या किसी भी प्रकार की भूमि / संपत्ति के सभी वास्तु दोषों के निवारण के लिए किया जाता है।
- यदि भूमि में कुछ दोष हो, यदि दिशाएँ दोषपूर्ण हो, ईशान जैसे कुछ कोण उनके सही स्थान पर न हो, अव्यवस्थित हो और कुछ अतिरिक्त बड़े हो, वास्तु की दृष्टि से ये सब दोष का कारण हो सकते है।
- अधिक तोड़-फोड़ के बिना इन दोषों को दूर करने के लिए, यह "मंत्र सिद्ध वास्तु कलश" सर्वश्रेष्ठ समाधान है
- कुल मिलाकर समृद्धि बढ़ाने के लिए वास्तु कलश सर्वश्रेष्ठ है।

# कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है।

## कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

## कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

## कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

# विद्या प्राप्ति हेतु सरस्वती कवच और यंत्र

आज के आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्ति जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हिन्दू धर्म में विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को माना जाता हैं। इस लिए देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना से कृपा प्राप्त करने से बुद्धि कुशाग्र एवं तीव्र होती है।

आज के सुविकसित समाज में चारों ओर बदलते परिवेश एवं आधुनिकता की दौड में नये-नये खोज एवं संशोधन के आधारो पर बच्चो के बौधिक स्तर पर अच्छे विकास हेतु विभिन्न परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धाएं होती रहती हैं, जिस में बच्चे का बुद्धिमान होना अति आवश्यक हो जाता हैं। अन्यथा बच्चा परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा में पीछड जाता हैं, जिससे आजके पढेलिखे आधुनिक बुद्धि से सुसंपन्न लोग बच्चे को मूर्ख अथवा बुद्धिहीन या अल्पबुद्धि समझते हैं। एसे बच्चो को हीन भावना से देखने लोगो को हमने देखा हैं, आपने भी कई सैकडो बार अवश्य देखा होगा?

ऐसे बच्चो की बुद्धि को कुशाग्र एवं तीव्र हो, बच्चो की बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति का विकास हो इस लिए सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक हो सकता हैं।

सरस्वती कवच को देवी सरस्वती के परंम दूर्लभ तेजस्वी मंत्रो द्वारा पूर्ण मंत्रसिद्ध और पूर्ण चैतन्ययुक्त किया जाता हैं। जिस्से जो बच्चे मंत्र जप अथवा पूजा-अर्चना नहीं कर सकते वह विशेष लाभ प्राप्त कर सके और जो बच्चे पूजा-अर्चना करते हैं, उन्हें देवी सरस्वती की कृपा शीघ्र प्राप्त हो इस लिये सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक होता हैं।

सरस्वती कवच और यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

>> Order Now

| सरस्वती कवच : मूल्य: 1250 और 1090 | सरस्वती यंत्र :मूल्य : 370से 1630 तक |
|---|---|

**GURUTVA KARYALAY**

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- http://gk.yolasite.com/ and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

# सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

**कवच के प्रमुख लाभ**: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।



GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

# मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

| | |
|---|---|
| काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900 | कमल गट्टे की माला - Rs- 370 |
| माया जाल- Rs- 251, 551, 751 | हल्दी माला - Rs- 280 |
| धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550) | तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460 |
| घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751 | नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above |
| हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370 | नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730 |
| लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190 | हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910 |
| नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145 | मूंगे की माला Rs- 1050, 1900 & Above |
| स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250 | पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above |
| सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910 | वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460 |
| रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550, | रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450 |
| मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above | विधुत माला - Rs- 190, 280 |
| कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above | मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> **Shop Online \| Order Now** |

# मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> **Shop Online | Order Now**

**गुरुत्व कार्यालय** मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

**मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00**

# श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

# दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्ति संपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

# हमारे विशेष यंत्र

**व्यापार वृद्धि यंत्र:** हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

**भूमिलाभ यंत्र:** भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

**तंत्र रक्षा यंत्र:** किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

**आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र:** अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

**पदौन्नति यंत्र:** पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

**रत्नेश्वरी यंत्र:** रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

**भूमि प्राप्ति यंत्र:** जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

**गृह प्राप्ति यंत्र:** जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

**कैलास धन रक्षा यंत्र:** कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

## विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र) | महालक्ष्मयै बीज यंत्र | कनक धारा यंत्र |
| श्री यंत्र (मंत्र रहित) | महालक्ष्मी बीसा यंत्र | वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र) |
| श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित) | लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र | श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र) |
| श्री यंत्र (बीसा यंत्र) | लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र | अंकात्मक बीसा यंत्र |
| श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र | लक्ष्मी बीसा यंत्र | ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र |
| श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय) | लक्ष्मी गणेश यंत्र | धनदा यंत्र > Shop Online \| Order Now |

# सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 8200/-**

>> Shop Online | Order Now

(नोटः इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

**सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।**

## पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

# 100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

## द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> Shop Online | Order Now

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

# नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

**>> Shop Online | Order Now**

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

# मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

**वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र:** यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

**मूल्य Rs- 370 से 15400 तक**

**श्री हनुमान यंत्र** शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

**मूल्य Rs- 370 से 15400 तक**

| विभिन्न देवताओं के यंत्र | | |
|---|---|---|
| गणेश यंत्र | महामृत्युंजय यंत्र | राम रक्षा यंत्र राज |
| गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | महामृत्युंजय कवच यंत्र | राम यंत्र |
| गणेश सिद्ध यंत्र | महामृत्युंजय पूजन यंत्र | द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र |
| एकाक्षर गणपति यंत्र | महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र | विष्णु बीसा यंत्र |
| हरिद्रा गणेश यंत्र | शिव पंचाक्षरी यंत्र | गरुड पूजन यंत्र |
| कुबेर यंत्र | शिव यंत्र | चिंतामणी यंत्र राज |
| श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र | अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र | चिंतामणी यंत्र |
| दत्तात्रय यंत्र | नृसिंह पूजन यंत्र | स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र |
| दत्त यंत्र | पंचदेव यंत्र | हनुमान पूजन यंत्र |
| आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र | संतान गोपाल यंत्र | हनुमान यंत्र |
| बटुक यंत्र | श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र | संकट मोचन यंत्र |
| व्यंकटेश यंत्र | कृष्ण बीसा यंत्र | वीर साधन पूजन यंत्र |
| कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र | सर्व काम प्रद भैरव यंत्र | दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र |
| **मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र** | | |
| व्यापार वृद्धि कारक यंत्र | अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र | त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र |
| व्यापार वृद्धि यंत्र | विजयराज पंचदशी यंत्र | मधुमेह निवारक यंत्र |
| व्यापार वर्धक यंत्र | विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र | ज्वर निवारण यंत्र |
| व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र | सम्मान दायक यंत्र | रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र |
| भाग्य वर्धक यंत्र | सुख शांति दायक यंत्र | रोग निवारक यंत्र |
| स्वस्तिक यंत्र | बाला यंत्र | तनाव मुक्त बीसा यंत्र |
| सर्व कार्य बीसा यंत्र | बाला रक्षा यंत्र | विद्युत मानस यंत्र |
| कार्य सिद्धि यंत्र | गर्भ स्तम्भन यंत्र | गृह कलह नाशक यंत्र |
| सुख समृद्धि यंत्र | संतान प्राप्ति यंत्र | कलेश हरण बत्तिसा यंत्र |
| सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र | प्रसूता भय नाशक यंत्र | वशीकरण यंत्र |
| सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र | प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र | मोहिनि वशीकरण यंत्र |
| ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र | शांति गोपाल यंत्र | कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र |
| सर्व सिद्धि यंत्र | त्रिशूल बीशा यंत्र | वार्ताली स्तम्भन यंत्र |
| साबर सिद्धि यंत्र | पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके) | वास्तु यंत्र |
| शाबरी यंत्र | बेकारी निवारण यंत्र | श्री मत्स्य यंत्र |
| सिद्धाश्रम यंत्र | षोडशी यंत्र | वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र |
| ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र | अडसठिया यंत्र | प्रेत-बाधा नाशक यंत्र |
| ब्रह्माण्ड साबर सिद्धि यंत्र | अस्सीया यंत्र | भूतादी व्याधिहरण यंत्र |
| कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र | ऋद्धि कारक यंत्र | कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र |
| क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र | मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र | भय नाशक यंत्र |
| श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र | विवाहकर यंत्र | स्वप्न भय निवारक यंत्र |

| | | |
|---|---|---|
| ज्ञान दाता महा यंत्र | लग्न विघ्न निवारक यंत्र | कुदृष्टि नाशक यंत्र |
| काया कल्प यंत्र | लग्न योग यंत्र | श्री शत्रु पराभव यंत्र |
| दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र | दरिद्रता विनाशक यंत्र | शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र |

## मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

| | |
|---|---|
| आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र) | सरस्वती यंत्र |
| महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र) | सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित) |
| नव दुर्गा यंत्र | काली यंत्र |
| नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र) | श्मशान काली पूजन यंत्र |
| नवार्ण बीसा यंत्र | दक्षिण काली पूजन यंत्र |
| चामुंडा बीसा यंत्र ( नवग्रह युक्त) | संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र |
| त्रिशूल बीसा यंत्र | खोडियार यंत्र |
| बगला मुखी यंत्र | खोडियार बीसा यंत्र |
| बगला मुखी पूजन यंत्र | अन्नपूर्णा पूजा यंत्र |
| राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र | एकांक्षी श्रीफल यंत्र |

## मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

| | |
|---|---|
| श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र) | महालक्ष्मयै बीज यंत्र |
| श्री यंत्र (मंत्र रहित) | महालक्ष्मी बीसा यंत्र |
| श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित) | लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र |
| श्री यंत्र (बीसा यंत्र) | लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र |
| श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र | लक्ष्मी गणेश यंत्र |
| श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय) | ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र |
| लक्ष्मी बीसा यंत्र | कनक धारा यंत्र |
| श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र) | वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र) |
| अंकात्मक बीसा यंत्र | |

| ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated) | | ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated) | | ताम्र पत्र पर (Copper) | |
|---|---|---|---|---|---|
| साईज | मूल्य | साईज | मूल्य | साईज | मूल्य |
| 1" X 1" | 595 | 1" X 1" | 460 | 1" X 1" | 370 |
| 2" X 2" | 955 | 2" X 2" | 820 | 2" X 2" | 595 |
| 3" X 3" | 1630 | 3" X 3" | 1360 | 3" X 3" | 1000 |
| 4" X 4" | 2710 | 4" X 4" | 2350 | 4" X 4" | 1360 |
| 6" X 6" | 4150 | 6" X 6" | 3700 | 6" X 6" | 2800 |
| 9" X 9" | 9550 | 9" X 9" | 8200 | 9" X 9" | 4600 |
| 12" X12" | 15400 | 12" X12" | 12700 | 12" X12" | 10000 |

# राशि रत्न

| मेष राशि: | वृषभ राशि: | मिथुन राशि: | कर्क राशि: | सिंह राशि: | कन्या राशि: |
|---|---|---|---|---|---|
| मूंगा | हीरा | पन्ना | मोती | माणेक | पन्ना |
| **Red Coral (Special)** | **Diamond (Special)** | **Green Emerald (Special)** | **Naturel Pearl (Special)** | **Ruby (Old Berma) (Special)** | **Green Emerald (Special)** |
| 5.25" Rs. 1050 | 10 cent Rs. 4100 | 5.25" Rs. 9100 | 5.25" Rs. 910 | 2.25" Rs. 12500 | 5.25" Rs. 9100 |
| 6.25" Rs. 1250 | 20 cent Rs. 8200 | 6.25" Rs. 12500 | 6.25" Rs. 1250 | 3.25" Rs. 15500 | 6.25" Rs. 12500 |
| 7.25" Rs. 1450 | 30 cent Rs. 12500 | 7.25" Rs. 14500 | 7.25" Rs. 1450 | 4.25" Rs. 28000 | 7.25" Rs. 14500 |
| 8.25" Rs. 1800 | 40 cent Rs. 18500 | 8.25" Rs. 19000 | 8.25" Rs. 1900 | 5.25" Rs. 46000 | 8.25" Rs. 19000 |
| 9.25" Rs. 2100 | 50 cent Rs. 23500 | 9.25" Rs. 23000 | 9.25" Rs. 2300 | 6.25" Rs. 82000 | 9.25" Rs. 23000 |
| 10.25" Rs. 2800 | | 10.25" Rs. 28000 | 10.25" Rs. 2800 | | 10.25" Rs. 28000 |
| ** All Weight In Rati | All Diamond are Full White Colour. | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati |

| तुला राशि: | वृश्चिक राशि: | धनु राशि: | मकर राशि: | कुंभ राशि: | मीन राशि: |
|---|---|---|---|---|---|
| हीरा | मूंगा | पुखराज | नीलम | नीलम | पुखराज |
| **Diamond (Special)** | **Red Coral (Special)** | **Y.Sapphire (Special)** | **B.Sapphire (Special)** | **B.Sapphire (Special)** | **Y.Sapphire (Special)** |
| 10 cent Rs. 4100 | 5.25" Rs. 1050 | 5.25" Rs. 30000 | 5.25" Rs. 30000 | 5.25" Rs. 30000 | 5.25" Rs. 30000 |
| 20 cent Rs. 8200 | 6.25" Rs. 1250 | 6.25" Rs. 37000 | 6.25" Rs. 37000 | 6.25" Rs. 37000 | 6.25" Rs. 37000 |
| 30 cent Rs. 12500 | 7.25" Rs. 1450 | 7.25" Rs. 55000 | 7.25" Rs. 55000 | 7.25" Rs. 55000 | 7.25" Rs. 55000 |
| 40 cent Rs. 18500 | 8.25" Rs. 1800 | 8.25" Rs. 73000 | 8.25" Rs. 73000 | 8.25" Rs. 73000 | 8.25" Rs. 73000 |
| 50 cent Rs. 23500 | 9.25" Rs. 2100 | 9.25" Rs. 91000 | 9.25" Rs. 91000 | 9.25" Rs. 91000 | 9.25" Rs. 91000 |
| | 10.25" Rs. 2800 | 10.25" Rs.108000 | 10.25" Rs.108000 | 10.25" Rs.108000 | 10.25" Rs.108000 |
| All Diamond are Full White Colour. | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati |

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

# श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

**श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

**श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‌भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

**श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।



**श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

## जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

| | |
|---|---|
| श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र | श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र |
| श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र | सर्वतो भद्र यंत्र |
| कल्पवृक्ष यंत्र | सर्व संपत्तिकर यंत्र |
| चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र | सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र) |
| चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र) | ऋषि मंडल यंत्र |
| चिंतामणी चक्र यंत्र | जगदवल्लभ कर यंत्र |
| श्री चक्रेश्वरी यंत्र | ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र |
| श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र | ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र |
| श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र) | विषम विष निग्रह कर यंत्र |
| श्री पद्मावती यंत्र | क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र |
| श्री पद्मावती बीसा यंत्र | बृहच्चक्र यंत्र |
| श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र | वंध्या शब्दापह यंत्र |
| पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र | मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र |
| श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र | कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र |
| श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र | बालग्रह पीडा निवारण यंत्र |
| श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र | लधुदेव कुल यंत्र |
| भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक) | नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र |
| मणिभद्र यंत्र | उवसग्गहरं यंत्र |
| श्री यंत्र | श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र |
| श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र | ह्रींकार मय बीज मंत्र |
| श्री लक्ष्मीकर यंत्र | वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र |
| लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र | विद्या यंत्र |
| महाविजय यंत्र | सौभाग्यकर यंत्र |
| विजयराज यंत्र | डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र |
| विजय पतका यंत्र | भूतादि निग्रह कर यंत्र |
| विजय यंत्र | ज्वर निग्रह कर यंत्र |
| सिद्धचक्र महायंत्र | शाकिनी निग्रह कर यंत्र |
| दक्षिण मुखाय शंख यंत्र | आपत्ति निवारण यंत्र |
| दक्षिण मुखाय यंत्र | शत्रुमुख स्तंभन यंत्र |

# श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

## (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्‌भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2800 से Rs. 15400 तक उप्लब्द्ध**

# सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

**ज्योतिष** विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

**कवच के लाभ :**

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

**नोट:-** पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> **Shop Online** | **Order Now**

## Declaration Notice

- ❖ We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- ❖ We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- ❖ If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- ❖ We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- ❖ Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- ❖ Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- ❖ Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

### Our Goal

- ❖ Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

# मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है । अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

## मंत्र सिद्ध कवच सूचि

| कवच | मूल्य | कवच | मूल्य |
|---|---|---|---|
| राज राजेश्वरी कवच<br>Raj Rajeshwari Kawach ………..……………………… | 12900 | अष्ट विनायक कवच<br>Asht Vinayak Kawach ………..………………………... | 2800 |
| अमोघ महामृत्युंजय कवच<br>Amogh Mahamrutyunjay Kawach …………………….. | 12700 | विष्णु बीसा कवच<br>Vishnu Visha Kawach ………..………………………... | 2800 |
| दस महाविद्या कवच<br>Dus Mahavidhya Kawach ………..……………………. | 7300 | रामभद्र बीसा कवच<br>Ramabhadra Visha Kawach ………..……………………. | 2800 |
| श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच<br>Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach.. | 7300 | कुबेर बीसा कवच<br>Kuber Visha Kawach ………..……………………….. | 2800 |
| सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच<br>Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………... | 7300 | गरुड बीसा कवच<br>Garud Visha Kawach ………..……………………….. | 2800 |
| नवदुर्गा शक्ति कवच<br>Navdurga Shakiti Kawach ………..……………………. | 7300 | लक्ष्मी बीसा कवच<br>Lakshmi Visha Kawach ……..……………………….. | 2800 |
| रसायन सिद्धि कवच<br>Rasayan Siddhi Kawach ………..…………………….. | 7300 | सिंह बीसा कवच<br>Sinha Visha Kawach ………..……………………….. | 2800 |
| पंचदेव शक्ति कवच<br>Pancha Dev Shakti Kawach ………..……………………. | 6400 | नर्वाण बीसा कवच<br>Narvan Visha Kawach ………..……………………... | 2800 |
| सर्व कार्य सिद्धि कवच<br>Sarv Karya Siddhi Kawach ………..………………….. | 6400 | संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच<br>Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ………..…… | 2800 |
| सुवर्ण लक्ष्मी कवच<br>Suvarn Lakshmi Kawach ………..……………………. | 5500 | राम रक्षा कवच<br>Ram Raksha Kawach ………..……………………….. | 2800 |
| स्वर्णाकर्षण भैरव कवच<br>Swarnakarshan Bhairav Kawach ………..…………… | 5500 | नारायण रक्षा कवच<br>Narayan Raksha Kavach ……………………………... | 2800 |
| कालसर्प शांति कवच<br>Kalsharp Shanti Kawach ………..………………….. | 4600 | हनुमान रक्षा कवच<br>Hanuman Raksha Kawach ………..……………….. | 2800 |
| विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच<br>Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ……..…… | 3700 | भैरव रक्षा कवच<br>Bhairav Raksha Kawach ……………………………. | 2800 |
| इष्ट सिद्धि कवच<br>Isht Siddhi Kawach ………..……………………………. | 3250 | कैलाश धन रक्षा कवच<br>Kailash Dhan Raksha Kawach………………………… | 2800 |
| परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच<br>Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach …………..... | 2800 | शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच<br>Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach ….. | 2350 |
| श्रीदुर्गा बीसा कवच<br>Durga Visha Kawach ………..……………………………. | 2800 | श्रापित योग निवारण कवच<br>Sharapit Yog Nivaran Kawach ……..……………….. | 2350 |
| कृष्ण बीसा कवच<br>Krushna Bisa Kawach ………..…………………………... | 2800 | श्रापित दोष निवारण कवच<br>Pitru Dosh Yog Nivaran Kawach…….……………….. | 2350 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| विष योग निवारण कवच<br>Vish Yog Nivaran Kawach ……..…………………… | 2350 | ऋण / कर्ज मुक्ति कवच<br>Rin / Karaj Mukti Kawach ……..…………………… | 1450 |
| सर्वजन वशीकरण कवच<br>Sarvjan Vashikaran Kawach ……..…………………… | 1900 | शत्रु विजय कवच<br>Shatru Vijay Kawach ……………………………….. | 1250 |
| सिद्धि विनायक गणपति कवच<br>Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ……..…………….. | 1900 | विवाह बाधा निवारण कवच<br>Vivah Badha Nivaran Kawach ……………………….. | 1250 |
| सकल सम्मान प्राप्ति कवच<br>Sakal Samman Praapti Kawach ……..……………… | 1900 | स्वस्तिक बीसा कवच<br>Swastik Visha Kawach ……..…………………………. | 1250 |
| आकर्षण वृद्धि कवच<br>Aakarshan Vruddhi Kawach ……..…………………… | 1900 | स्वप्न भय निवारण कवच<br>Swapna Bhay Nivaran Kawach ……..…………….. | 1250 |
| वशीकरण नाशक कवच<br>Vasikaran Nashak Kawach ……..……………………. | 1900 | सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए)<br>Saraswati Kawach (For Class +10) ………………….. | 1250 |
| प्रीति नाशक कवच<br>Preeti Nashak Kawach ……..…………………………. | 1900 | सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए)<br>Saraswati Kawach (For up to Class 10) …………….. | 1090 |
| चंडाल योग निवारण कवच<br>Chandal Yog Nivaran Kawach ……..………………… | 1900 | वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए)<br>Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) ……………. | 1450 |
| ग्रहण योग निवारण कवच<br>Grahan Yog Nivaran Kawach ……..………………….. | 1900 | सुदर्शन बीसा कवच<br>Sudarshan Visha Kawach ……..……………….…….. | 1090 |
| मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग )<br>Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) ………… | 1900 | महा सुदर्शन कवच<br>Mahasudarshan Kawach ……..……………...………… | 1090 |
| अष्ट लक्ष्मी कवच<br>Asht Lakshmi Kawach ……..………………………….. | 1450 | तंत्र रक्षा कवच<br>Tantra Raksha Kawach ………………………………… | 1090 |
| आकस्मिक धन प्राप्ति कवच<br>Akashmik Dhan Prapti Kawach ……..…………….…. | 1450 | त्रिशूल बीसा कवच<br>Trishool Visha Kawach ……..………………………... | 1090 |
| स्पे.व्यापार वृद्धि कवच<br>Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..……………… | 1450 | व्यापर वृद्धि कवच<br>Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………... | 1090 |
| धन प्राप्ति कवच<br>Dhan Prapti Kawach ……..…………………………... | 1450 | सर्व रोग निवारण कवच<br>Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………... | 1090 |
| कार्य सिद्धि कवच<br>Karya Siddhi Kawach ……..……………………………. | 1450 | शारीरिक शक्ति वर्धक कवच<br>Sharirik Shakti Vardhak Kawach ……………………... | 1090 |
| भूमिलाभ कवच<br>Bhumilabh Kawach ……..……………………………. | 1450 | पत्नी वशीकरण कवच<br>Patni Vasikaran Kawach ……………………………... | 1000 |
| नवग्रह शांति कवच<br>Navgrah Shanti Kawach ……..………………………….. | 1450 | पति वशीकरण कवच<br>Pati Vasikaran Kawach ………………………………. | 1000 |
| संतान प्राप्ति कवच<br>Santan Prapti Kawach ……..…………………………. | 1450 | वशीकरण कवच ( 1 व्यक्ति के लिए)<br>Vashikaran Kawach (For 1 Person) ………………….. | 1000 |
| कामदेव कवच<br>Kamdev Kawach ……..……………………………… | 1450 | मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच<br>Mastishk Prushti Vardhak Kawach ………………….. | 1000 |
| हंस बीसा कवच<br>Hans Visha Kawach ……..…………………………….. | 1450 | वाणी पृष्टि वर्धक कवच<br>Vani Prushti Vardhak Kawach ……………………….. | 1000 |
| पदौन्नति कवच<br>Padounnati Kawach ……..……………………………. | 1450 | कामना पूर्ति कवच<br>Kamana Poorti Kawach ……………………………... | 1000 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| विरोध नाशक कवच<br>Virodh Nashan Kawach .................................... | 1000 | सिद्ध राहु कवच<br>Siddha Rahu Kawach ........................................ | 1000 |
| सिद्ध सूर्य कवच<br>Siddha Surya Kawach ...................................... | 1000 | सिद्ध केतु कवच<br>Siddha Ketu Kawach ....................................... | 1000 |
| सिद्ध चंद्र कवच<br>Siddha Chandra Kawach .................................. | 1000 | रोजगार वृद्धि कवच<br>Rojgar Vruddhi Kawach .................................... | 910 |
| सिद्ध मंगल कवच (कुजा)<br>Siddha Mangal Kawach (Kuja) .......................... | 1000 | रोजगार प्राप्ति कवच<br>Rojagar Prapti Kawach ....................................... | 910 |
| सिद्ध बुध कवच<br>Siddha Bhudh Kawach ..................................... | 1000 | विघ्न बाधा निवारण कवच<br>Vighna Badha Nivaran Kawah ............................. | 910 |
| सिद्ध गुरु कवच<br>Siddha Guru Kawach ...................................... | 1000 | नज़र रक्षा कवच<br>Najar Raksha Kawah ......................................... | 910 |
| सिद्ध शुक्र कवच<br>Siddha Shukra Kawach .................................. | 1000 | दुर्भाग्य नाशक कवच<br>Durbhagya Nashak ............................................ | 820 |
| सिद्ध शनि कवच<br>Siddha Shani Kawach ...................................... | 1000 | | |

# Gemstone Price List

| NAME OF GEM STONE | | GENERAL | MEDIUM FINE | FINE | SUPER FINE | SPECIAL |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Emerald | (पन्ना) | 200.00 | 500.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 & above |
| Yellow Sapphire | (पुखराज) | 550.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 | 4600.00 & above |
| **Yellow Sapphire** Bangkok | (बैंकोक पुखराज) | 550.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 | 4600.00 & above |
| Blue Sapphire | (नीलम) | 550.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 | 4600.00 & above |
| White Sapphire | (सफ़ेद पुखराज) | 1000.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 | 4600.00 & above |
| **Bangkok Black Blue** | (बैंकोक नीलम) | 100.00 | 150.00 | 190.00 | 550.00 | 1000.00 & above |
| Ruby | (माणिक) | 100.00 | 190.00 | 370.00 | 730.00 | 1900.00 & above |
| Ruby Berma | (बर्मा माणिक) | 5500.00 | 6400.00 | 8200.00 | 10000.00 | 21000.00 & above |
| Speenal | (नरम माणिक/लालडी) | 300.00 | 600.00 | 1200.00 | 2100.00 | 3200.00 & above |
| Pearl | (मोति) | 30.00 | 60.00 | 90.00 | 120.00 | 280.00 & above |
| Red Coral (4 रति तक) | (लाल मूंगा) | 125.00 | 190.00 | 280.00 | 370.00 | 460.00 & above |
| Red Coral (4 रति से उपर) | (लाल मूंगा) | 190.00 | 280.00 | 370.00 | 460.00 | 550.00 & above |
| White Coral | (सफ़ेद मूंगा) | 73.00 | 100.00 | 190.00 | 280.00 | 460.00 & above |
| Cat's Eye | (लहसुनिया) | 25.00 | 45.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Cat's Eye ODISHA | (उडिसा लहसुनिया) | 280.00 | 460.00 | 730.00 | 1000.00 | 1900.00 & above |
| Gomed | (गोमेद) | 19.00 | 28.00 | 45.00 | 100.00 | 190.00 & above |
| Gomed CLN | (सिलोनी गोमेद) | 190.00 | 280.00 | 460.00 | 730.00 | 1000.00 & above |
| Zarakan | (जरकन) | 550.00 | 730.00 | 820.00 | 1050.00 | 1250.00 & above |
| Aquamarine | (बेरुज) | 210.00 | 320.00 | 410.00 | 550.00 | 730.00 & above |
| Lolite | (नीली) | 50.00 | 120.00 | 230.00 | 390.00 | 500.00 & above |
| Turquoise | (फ़िरोजा) | 100.00 | 145.00 | 190.00 | 280.00 | 460.00 & above |
| Golden Topaz | (सुनहला) | 28.00 | 46.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Real Topaz | (उडिसा पुखराज/टोपज) | 100.00 | 190.00 | 280.00 | 460.00 | 640.00 & above |
| **Blue Topaz** | **(नीला टोपज)** | 100.00 | 190.00 | 280.00 | 460.00 | 640.00 & above |
| White Topaz | (सफ़ेद टोपज) | 60.00 | 90.00 | 120.00 | 240.00 | 410.00& above |
| Amethyst | (कटेला) | 28.00 | 46.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Opal | (उपल) | 28.00 | 46.00 | 90.00 | 190.00 | 460.00 & above |
| Garnet | (गारनेट) | 28.00 | 46.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Tourmaline | (तुर्मलीन) | 120.00 | 140.00 | 190.00 | 300.00 | 730.00 & above |
| Star Ruby | (सुर्यकान्त मणि) | 45.00 | 75.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Black Star | (काला स्टार) | 15.00 | 30.00 | 45.00 | 60.00 | 100.00 & above |
| Green Onyx | (ओनेक्स) | 10.00 | 19.00 | 28.00 | 55.00 | 100.00 & above |
| Lapis | (लाजर्वत) | 15.00 | 28.00 | 45.00 | 100.00 | 190.00 & above |
| Moon Stone | (चन्द्रकान्त मणि) | 12.00 | 19.00 | 28.00 | 55.00 | 190.00 & above |
| Rock Crystal | (स्फ़टिक) | 19.00 | 46.00 | 15.00 | 30.00 | 45.00 & above |
| Kidney Stone | (दाना फ़िरंगी) | 09.00 | 11.00 | 15.00 | 19.00 | 21.00 & above |
| Tiger Eye | (टाइगर स्टोन) | 03.00 | 05.00 | 10.00 | 15.00 | 21.00 & above |
| Jade | (मरगच) | 12.00 | 19.00 | 23.00 | 27.00 | 45.00 & above |
| Sun Stone | (सन सितारा) | 12.00 | 19.00 | 23.00 | 27.00 | 45.00 & above |

**Note : Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

## GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

# GURUTVA KARYALAY

| | YANTRA LIST | EFFECTS |
|---|---|---|
| | **Our Splecial Yantra** | |
| 1 | 12 – YANTRA SET | For all Family Troubles |
| 2 | VYAPAR VRUDDHI YANTRA | For Business Development |
| 3 | BHOOMI LABHA YANTRA | For Farming Benefits |
| 4 | TANTRA RAKSHA YANTRA | For Protection Evil Sprite |
| 5 | AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA | For Unexpected Wealth Benefits |
| 6 | PADOUNNATI YANTRA | For Getting Promotion |
| 7 | RATNE SHWARI YANTRA | For Benefits of Gems & Jewellery |
| 8 | BHUMI PRAPTI YANTRA | For Land Obtained |
| 9 | GRUH PRAPTI YANTRA | For Ready Made House |
| 10 | KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA | - |
| | **Shastrokt Yantra** | |
| 11 | AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA | Blessing of Durga |
| 12 | BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL) | Win over Enemies |
| 13 | BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL) | Blessing of Bagala Mukhi |
| 14 | BHAGYA VARDHAK YANTRA | For Good Luck |
| 15 | BHAY NASHAK YANTRA | For Fear Ending |
| 16 | CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta) | Blessing of Chamunda & Navgraha |
| 17 | CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA | Blessing of Chhinnamasta |
| 18 | DARIDRA VINASHAK YANTRA | For Poverty Ending |
| 19 | DHANDA POOJAN YANTRA | For Good Wealth |
| 20 | DHANDA YAKSHANI YANTRA | For Good Wealth |
| 21 | GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra) | Blessing of Lord Ganesh |
| 22 | GARBHA STAMBHAN YANTRA | For Pregnancy Protection |
| 23 | GAYATRI BISHA YANTRA | Blessing of Gayatri |
| 24 | HANUMAN YANTRA | Blessing of Lord Hanuman |
| 25 | JWAR NIVARAN YANTRA | For Fewer Ending |
| 26 | JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA | For Astrology & Spritual Knowlage |
| 27 | KALI YANTRA | Blessing of Kali |
| 28 | KALPVRUKSHA YANTRA | For Fullfill your all Ambition |
| 29 | KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA) | Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga |
| 30 | KANAK DHARA YANTRA | Blessing of Maha Lakshami |
| 31 | KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA | - |
| 32 | KARYA SHIDDHI YANTRA | For Successes in work |
| 33 | • SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA | For Successes in all work |
| 34 | KRISHNA BISHA YANTRA | Blessing of Lord Krishna |
| 35 | KUBER YANTRA | Blessing of Kuber (Good wealth) |
| 36 | LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA | For Obstaele Of marriage |
| 37 | LAKSHAMI GANESH YANTRA | Blessing of Lakshami & Ganesh |
| 38 | MAHA MRUTYUNJAY YANTRA | For Good Health |
| 39 | MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA | Blessing of Shiva |
| 40 | MANGAL YANTRA ( TRIKON 21 BEEJ MANTRA) | For Fullfill your all Ambition |
| 41 | MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA | For Marriage with choice able Girl |
| 42 | NAVDURGA YANTRA | Blessing of Durga |

| | YANTRA LIST | EFFECTS |
|---|---|---|
| 43 | NAVGRAHA SHANTI YANTRA | For good effect of 9 Planets |
| 44 | NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA | For good effect of 9 Planets |
| 45 | • SURYA YANTRA | Good effect of Sun |
| 46 | • CHANDRA YANTRA | Good effect of Moon |
| 47 | • MANGAL YANTRA | Good effect of Mars |
| 48 | • BUDHA YANTRA | Good effect of Mercury |
| 49 | • GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA) | Good effect of Jyupiter |
| 50 | • SUKRA YANTRA | Good effect of Venus |
| 51 | • SHANI YANTRA (COPER & STEEL) | Good effect of Saturn |
| 52 | • RAHU YANTRA | Good effect of Rahu |
| 53 | • KETU YANTRA | Good effect of Ketu |
| 54 | PITRU DOSH NIVARAN YANTRA | For Ancestor Fault Ending |
| 55 | PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA | For Pregnancy Pain Ending |
| 56 | RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA | For Benefits of State & Central Gov |
| 57 | RAM YANTRA | Blessing of Ram |
| 58 | RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA | Blessing of Riddhi-Siddhi |
| 59 | ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA | For Disease- Pain- Poverty Ending |
| 60 | SANKAT MOCHAN YANTRA | For Trouble Ending |
| 61 | SANTAN GOPAL YANTRA | Blessing Lorg Krishana For child acquisition |
| 62 | SANTAN PRAPTI YANTRA | For child acquisition |
| 63 | SARASWATI YANTRA | Blessing of Sawaswati (For Study & Education) |
| 64 | SHIV YANTRA | Blessing of Shiv |
| 65 | SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA) | Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace |
| 66 | SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA | Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth |
| 67 | SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA | For Bad Dreams Ending |
| 68 | VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA | For Vehicle Accident Ending |
| 69 | VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA) | Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes |
| 70 | VASTU YANTRA | For Bulding Defect Ending |
| 71 | VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA | For Education- Fame- state Award Winning |
| 72 | VISHNU BISHA YANTRA | Blessing of Lord Vishnu (Narayan) |
| 73 | VASI KARAN YANTRA | Attraction For office Purpose |
| 74 | • MOHINI VASI KARAN YANTRA | Attraction For Female |
| 75 | • PATI VASI KARAN YANTRA | Attraction For Husband |
| 76 | • PATNI VASI KARAN YANTRA | Attraction For Wife |
| 77 | • VIVAH VASHI KARAN YANTRA | Attraction For Marriage Purpose |

**Yantra Available @:-** Rs- 370 to 15400 and Above…..

# सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

**(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)**

FREE
E CIRCULAR

# गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

## फरवरी-2021

**संपादक**

चिंतन जोशी

**संपर्क**

## गुरुत्व ज्योतिष विभाग

## गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

**फोन**

91+9338213418, 91+9238328785

**ईमेल**

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

**वेब**

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

# हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

# GURUTVA JYOTISH

# Monthly

# FEB-2021